कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/143/2022-24 RNI No. 1832/57 डाक प्रेषण का दिन - सोमवार, मंगलवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 भोपाल, प्रकाशन - सोमवार, 29 अप्रैल 2024 वर्ष-78 अंक- 35 मूल्य-रु. 12/- कुल पृष्ठ-16 www.krishakjagat.org पृष्ठ- 1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

अन्दर पढ़िए

6

मशरूम की किस्में एवं उत्पादन तकनीक

गिरते कृषि निर्यात को थामने सरकार बनाएगी नीति

(निमिष गंगराड़े)

नई दिल्ली (कृषक जगत)। वैश्विक व्यापार में, विशेष रूप से निर्यात कारोबार में भारत की भागीदारी नगण्य है। भारत से होने वाले कृषि निर्यात में भी गत कुछ वर्षों से कमी आई है। चुनावी वर्ष के साये में केंद्र सरकार ने देश की बहुसंख्य आबादी की खाद्य सुरक्षा के लिए चावल, गेहूं, शक्कर, प्याज जैसी आवश्यक वस्तुओं के निर्यात पर भी प्रतिबंध लगा रखा है। इसके अलावा रूस-यूक्रेन लड़ाई, लाल सागर में यमन के लूटेरों के बढ़ते आतंक ने भी कृषि निर्यात को प्रभावित किया है। देश का कृषि निर्यात वित्त वर्ष 2023-24 में अप्रैल-फरवरी के दौरान 8.8 प्रतिशत घटकर 43.7 अरब डालर रहा। वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान भारत का कृषि निर्यात 50.21 बिलियन अमेरिकी डॉलर पहुँच गया था। कृषि निर्यात में बढ़ोतरी से किसानों की आमदनी भी बढ़ती है और उनकी आय पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

इन्ही अवरोधों के समुचित समाधान निकलने की दिशा में केंद्र सरकार के वाणिज्य मंत्रालय ने बासमती चावल, आम, केला, आलू, बेबीकार्न सहित अन्य उच्च संभावना वाले 20 कृषि उत्पादों का एक्सपोर्ट बढ़ाने की नीति पर जोरों से काम कर रही है।

संभवत: नई सरकार के केंद्र में आते ही इस आशय की कार्य योजना तैयार कर राज्य सरकारों को भी भेज दी जाएगी। वाणिज्य मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक केंद्र सरकार द्वारा कृषि उत्पादों के निर्यात के लिए नोडल एजेंसी एपीडा, राज्यों समेत सभी स्टैक होल्डर्स से योजना पर मंथन कर रही है। वाणिज्य विभाग के अतिरिक्त सचिव श्री राजेश अग्रवाल ने बताया कि जिन 20 उत्पादों की लिस्टिंग की गई है, उनका 2022 में वैश्विक व्यापार 405.24 अरब डालर था, जिसमें भारत का निर्यात 9.03 अरब डालर था।

नई सरकार ला सकती है खेती के नियमों में सुधार

• शशिकांत त्रिवेदी, वरिष्ठ पत्रकार
मो. : 9893355391

चुनावों के बाद नई सरकार खेती के क्षेत्र में क्या बदलाव कर सकती है? अभी इस सवाल का अभी उत्तर देना थोड़ा मुश्किल है क्योंकि चुनाव के नतीजे आने और नई सरकार कामकाज शुरू करने में थोड़ा वक्त लेती है। फिर भी यदि खेती के कानूनों के रद्द हो जाने के बाद नई सरकार के सामने कुछ कृषि क्षेत्र के आगत (इनपुट) में सुधार करने पर विचार कर सकती है। बीज, उर्वरक और पौधों के रसायनों को नियंत्रित करने वाले नियमों में सुधार ला सकती है। सूत्रों के मुताबिक मौजूदा सरकार यदि वापस आती है तो किसानों के लिए कुछ और अधिक आसानी सुनिश्चित करने के लिए उर्वरकों पर सब्सिडी को और अधिक नीम-लेपित यूरिया की सफलता को आगे बढ़ाने के लिए उर्वरक सब्सिडी को अधिक प्रभावी ढंग से प्रशासित करने और लीकेज और डायवर्जन को कम करने के तरीकों पर विचार कर जल्द लागू कर सकती है।

सूत्रों ने कहा कि बीजों और पौधों के रसायनों के मामले में बहुत सारे सुधारों की तत्काल आवश्यकता है क्योंकि भारत में नियामक और अनुमोदन प्रक्रिया में लंबा समय लगता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इसमें कई परतें शामिल हैं।

रसायनों के निर्यात में बढ़ोतरी

सरकार खेती में काम आने वाले रसायनों के लिए एक अनुकूल नीतिगत माहौल बनाने पर विचार कर सकती है। इससे खेती के रसायनों के निर्यात में बढ़ोतरी होगी और भारत विदेशी निवेश के लिए एक आकर्षक देश के रूप में स्थापित होगा। यह इस क्षेत्र में काम कर रहे छोटे और क्षेत्रीय उद्योगों के लिए बहुत कारगर होगा।

भारत में अभी नए कृषि रसायन मॉलिक्यूल (अणु) के पंजीकरण की वर्तमान प्रक्रिया को उद्योग अक्सर समय लेने वाली, महंगी और एक जटिल प्रक्रिया के रूप में देखते हैं। केवल कुछ बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और प्रमुख घरेलू कंपनियां ही नए अणुओं को विकसित करने और उन्हें निर्माण और बिक्री के लिए पंजीकृत कराने के लिए अनुसंधान और विकास (आरएंडडी) में निवेश करने का जोखिम उठा सकती हैं। नतीजा यह है कि भारत में अभी केवल लगभग 300 280 मॉलिक्यूल (अणु) और 800 फॉर्मूलेशन (संयोजन सहित) पंजीकृत हैं। भारत की तुलना में यूरोपीय संघ (ईयू) में यह संख्या दोगुनी और जापान में तिगुनी है।

खेती के निर्यात को बढ़ावा मिले

खेती में सलंग्न रसायन उद्योग केंद्रीय कीटनाशक प्रयोगशाला (सीआईएल) में भी सुधार चाहता है ताकि लंबित सूचियों और नए आवेदनों को मंजूरी देने में लगने वाले समय में कटौती की जा सके। भारतीय कृषि निर्यातकों के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों में से एक यूरोपीय संघ जैसे क्षेत्रों में कीटनाशक अवशेषों से संबंधित कड़े नियम हैं। आने वाली सरकार कुछ ऐसे सुधार कर सकती है जिससे लम्बे समय में खेती के निर्यात को बढ़ावा मिले। नकली बीजों की समस्या और उनके प्रसार को रोकने के लिए उचित नियमों की आवश्यकता भी आने वाले समय में सुधारों का हिस्सा बन सकती है।

कुछ साल पहले, कुछ हलकों में किसानों को मिलने वाले सीधे लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) को संशोधित कर देश के कुछ जिलों में एक पायलट प्रोजेक्ट भी शुरू हो सकता है जो भूमि जोत और पोषक तत्वों की खपत के बीच कुछ प्रकार का संबंध स्थापित करेगा।

वर्तमान में, डीबीटी के संस्करण में किसान आधार प्रमाणीकरण से गुजरने के बाद पॉइंट ऑफ सेल (पीओएस) उपकरणों के माध्यम से अपने उर्वरक खरीदते हैं। ताकि उर्वरक खरीदने वाले व्यक्ति की पहचान अच्छी तरह से स्थापित हो।

हालाँकि, प्रत्येक किसान द्वारा खरीदे जाने वाले उर्वरकों के बैग की संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है। इससे कभी-कभी अधिक उपयोग और दुरुपयोग की संभावना होती है।

दूसरा चरण : 13 राज्यों में 61 फीसदी मतदान हुआ

नई दिल्ली (कृषक जगत)। आम चुनाव 2024 के दूसरे चरण के मतदान के तहत 88 लोकसभा सीटों पर शाम 7 बजे तक लगभग 60.96 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। 13 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के मतदाता गर्म मौसम की स्थिति के बावजूद पूरे उत्साह के

साथ मतदान केंद्र पर वोट डालने के लिए आगे आए। नवविवाहितों से लेकर वरिष्ठ नागरिकों, जनजातियों से लेकर आईटी पेशेवरों, दिव्यांगों, महिलाओं और युवाओं तक, सभी वोट डालने के लिए कतारों में खड़े नजर आए। चरण-2 के समापन के साथ, आम चुनाव 2024 के लिए 14 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में मतदान पूरा हो गया है। सभी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में मतदान सुचारू और शांतिपूर्वक संपन्न हुआ। मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) श्री राजीव कुमार के नेतृत्व में आयोग ने ईसी श्री ज्ञानेश कुमार और श्री सुखबीर सिंह संधू के साथ सुबह से ही मतदान प्रक्रिया की लगातार निगरानी की।

चरण 2 में, छत्तीसगढ़ के बस्तर और कांकेर संसदीय क्षेत्रों के 46 गांवों के मतदाताओं ने लोकसभा चुनाव में पहली बार अपने ही गांव में स्थापित मतदान केंद्र में वोट डाला। इस प्रकार, चरण 1 सहित, कुल मिलाकर, ग्रामीणों की सुविधा के लिए इन पीसी में पहली बार 102 नए मतदान केंद्र स्थापित किए गए थे।

चावल अनुसंधान एवं विकास को आगे बढ़ाने के प्रयास

59वीं वार्षिक चावल समूह की बैठक

नई दिल्ली (कृषक जगत)। 59वीं वार्षिक चावल समूह बैठक (एआरजीएम) एनएएससी कॉम्प्लेक्स के डॉ. सी सुब्रमण्यम ऑडिटोरियम में हुई, जिसमें सरकारी और निजी हितधारकों सहित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों के 350 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। तीन दिवसीय कार्यक्रम आईसीएआर-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-आईएआरआई) के सहयोग से चावल पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एआईसीआर पीआर) द्वारा आयोजित किया गया ।

एआईसीआरपीआर की भूमिका

1965 में स्थापित, एआईसीआरपीआर ने भारत को चावल आयातक से सबसे बड़े वैश्विक निर्यातक में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। परियोजना के नेटवर्क में 45 वित्त पोषित केंद्र और लगभग 100 स्वैच्छिक केंद्र शामिल हैं, जो 400 से अधिक वैज्ञानिकों द्वारा समर्थित हैं। एआरजीएम पिछले प्रयोगों की समीक्षा करने, आशाजनक चावल की किस्मों और संकरों की पहचान करने और चावल की खेती में चुनौतियों के समाधान की रणनीति बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करता है।

डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा भारत के और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के महानिदेशक ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। उनके साथ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय गणमान्य व्यक्ति शामिल थे, जिनमें अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, फिलीपींस के अंतरिम महानिदेशक डॉ. अजय कोहली; आईसीएआर-आईएआरआई, नई दिल्ली के निदेशक डॉ. एके सिंह; आईसीएआर, नई दिल्ली के उप महानिदेशक डॉ. टीआर शर्मा; डॉ. डीके यादव, सहायक महानिदेशक (बीज), आईसीएआर, नई दिल्ली; और अन्य प्रसिद्ध वैज्ञानिकों में राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक के निदेशक डॉ. एके नायक शामिल थे।

(चित्र में) राष्ट्रीय धान कार्यशाला में इंदिरा गांधी कृषि विश्व विद्यालय को धान के जर्मप्लाज्म संग्रहण, संरक्षण और इनका प्रजनक कार्यक्रम में बेहतर उपयोग के लिए विशेष अवॉर्ड से कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल, पौध प्रजनन विभागाध्यक्ष डॉ. दीपक शर्मा और समस्त धान वैज्ञानिक, धान अनुसंधान को सम्मानित किया गया।

भारतीय पशु चिकित्सा परिषद के चुनाव की घोषणा

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्र सरकार ने भारतीय पशु चिकित्सा परिषद नियम-1985 के नियम 10 और 11 के प्रावधानों के अनुसरण में भारतीय पशु चिकित्सा परिषद अधिनियम-1984 (1984 का 52) की धारा-3 की उपधारा (3) के खंड (जी) के साथ पठित धारा- 4 के तहत जारी 25 अक्टूबर, 2023 की अधिसूचना एस.ओ. 4701(ई) के माध्यम से 11 सदस्यीय भारतीय पशु चिकित्सा परिषद के चुनाव की घोषणा की है। मतदान 8 जून को होगा और रिजल्ट 9 जून को घोषित किया जाएगा।

जायद की बोनी 68 लाख हेक्टेयर में हुई

(विशेष प्रतिनिधि)

नई दिल्ली (कृषक जगत)। देश में जायद (ग्रीष्मकालीन) फसलों की बुवाई अब तक 68.17 लाख हेक्टेयर में हुई है जो गत वर्ष की तुलना में लगभग 4 लाख हेक्टेयर अधिक है। गत वर्ष अब

तक 64.38 लाख हेक्टेयर में फसलें बोई गई थीं।

कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 27 अप्रैल तक जारी आंकड़ों के मुताबिक धान की बोनी 29.87 लाख हेक्टेयर में हुई है जो गत वर्ष से लगभग 2.5 लाख हेक्टेयर अधिक है। क्योंकि गत वर्ष अब तक 27.43 लाख हेक्टेयर में धान की बुवाई हो गई थी। इस वर्ष दलहनी फसलों का कुल क्षेत्र 16.38 लाख हेक्टेयर रहा वहीं वर्ष 2023 में कुल क्षेत्र 16.18 लाख हेक्टेयर क्षेत्र था। इसमें मुख्य रूप से मूंग 13.30 लाख हेक्टेयर में बोई गई है, जबकि गत वर्ष अब तक मूंग की बोनी 12.88 लाख हेक्टेयर में हुई थी। इसी प्रकार उड़द की बोनी 2.85 लाख हेक्टेयर में हो गई है, जो गत वर्ष अब तक 3.01 लाख हेक्टेयर में बोई गई थी। अन्य दलहनी फसलें भी 23 हजार हेक्टेयर में बोई गई हैं।

अब तक तिलहनी फसलों का कुल रकबा 10.01 लाख हेक्टेयर रहा वहीं गत वर्ष अब तक 9.78 लाख हेक्टेयर में बोनी हुई थी। इसके तहत मूंगफली की बुवाई 4.61 लाख हेक्टेयर में हुई है, जो गत वर्ष 4.57 लाख हेक्टेयर में हुई थी। इसी प्रकार तिल की बोनी 4.82 लाख हेक्टेयर में हो गई है, जो गत वर्ष 4.58 लाख हेक्टेयर में हुई थी। अन्य तिलहनी फसलों की बोनी भी 24 हजार हेक्टेयर में हो गई है। इसी प्रकार अब तक मोटे अनाज की बोनी 11.91 लाख हेक्टेयर में हुई है। जो गत वर्ष अब तक 11.05 लाख हेक्टेयर में हो गई थी। मोटे अनाजों के तहत बाजरा की बोनी 4.64 लाख हेक्टेयर में, मक्का 6.75 लाख हेक्टेयर में बोया गया है जो गत वर्ष क्रमशः 4.45 एवं 6.21 लाख हेक्टेयर में बोया गया था।

ग्रीष्मकालीन (जायद) फसलों की बुवाई स्थिति 27 अप्रैल तक

(लाख हेक्टेयर)

फसल	बुवाई का क्षेत्र	
	वर्ष 2024	वर्ष 2023
चावल	**29.87**	**27.43**
दालें	**16.38**	**16.18**
मूंग	13.30	12.88
उड़द	2.85	3.01
अन्य दालें	0.23	0.29
तिलहन	**10.01**	**9.71**
मूँगफली	4.61	4.57
सूरजमुखी	0.33	0.30
तिल	4.82	4.58
अन्य तिलहन	0.24	0.26
मोटा अनाज	**11.91**	**11.05**
बाजरा	4.64	4.45
मक्का	6.75	6.21
कुल	**68.17**	**64.38**

नोट : कुल क्षेत्रफल के आंकड़े चार्ट से अलग हैं, क्योंकि सभी फसलों को चार्ट में शामिल नहीं किया गया है।

स्त्रोत : कृषि मंत्रालय

कीटनाशक छिड़काव के लिए ड्रोन उपयोग की अनुमति बढ़ी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। कंपनियां पौध संरक्षण के लिए अब और एक वर्ष तक ड्रोन से कुछ खास कीटनाशकों का छिड़काव कर सकेंगी। केंद्र सरकार ने इसके लिए मिली अंतरिम मंजूरी की अवधि बढ़ा दी है। मंजूरी की अवधि 18 अप्रैल, 2024 से एक साल के लिए बढ़ाई गई है। पौधों की रक्षा के लिए ड्रोन से रसायन के छिड़काव की अन्य सभी शर्तें पूर्ववत बनी रहेंगी, जिसमें मानक परिचालन प्रक्रिया आदि शामिल है।

फसलों पर कीटनाशक छिड़कने के लिए ड्रोन के इस्तेमाल की मानक परिचालन प्रक्रिया (एसओपी) कुछ समय पहले जारी की गई थी, जिसमें ड्रोन उड़ाने की अनुमति, दूरी की सीमा, पंजीकरण, सुरक्षा बीमा, उड़ाने का प्रमाणपत्र, परिचालन योजना, विमान उड़ने के क्षेत्र, मौसम की स्थिति आदि जैसे वैधानिक प्रावधान शामिल हैं।

एसओपी में परिचालन के पहले, परिचालन के बाद और उस दौरान के नियम, आपातकालीन स्थिति की योजना आदि भी शामिल है। मंत्रालय ने पूर्व में 18 अप्रैल, 2022 को दो साल की अवधि के लिए ड्रोन छिड़काव के लिए उपयोग किए जाने वाले अंतरिम-अनुमोदित कीटनाशकों को सूचीबद्ध करते हुए एक ज्ञापन जारी किया था। कीटनाशकों, फफूंदनाशकों और पादप वृद्धि नियामकों (पीजीआर) (जैव-कीटनाशकों और वनस्पति कीटनाशकों सहित) से युक्त पंजीकृत कीटनाशक फॉर्मूलेशन, जिन्हें अन्यथा भारत में नैपसेक स्प्रेयर द्वारा मैन्युअल रूप से स्प्रे करने की अनुमति है, को ड्रोन के माध्यम से व्यावसायिक उपयोग के लिए अस्थायी रूप से अनुमोदित किया गया है।

इस समयावधि विस्तार आदेश का स्वागत करते हुए, क्रॉपलाइफ इंडिया के महासचिव श्री दुर्गेश चंद्र ने कहा कि इससे कृषि रसायन बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देने में काफी मदद मिलेगी और विशेष रूप से ड्रोन दीदी योजना को बढ़ावा मिलेगा।

लोकसभा निर्वाचन-2024

चौथे चरण में 90 अभ्यर्थियों के नामांकन मान्य

भोपाल (कृषक जगत)। लोकसभा निर्वाचन-2024 के निर्वाचन कार्यक्रम के अनुसार चौथे चरण के लिये 8 लोकसभा संसदीय क्षेत्रों में प्राप्त नामांकन पत्रों की संवीक्षा की गई। संवीक्षा के दौरान 90 अभ्यर्थियों के नामांकन पत्र मान्य पाए गये। कुल 11 अभ्यर्थियों के नामांकन पत्र अनुपयुक्त पाए जाने पर अस्वीकृत किये गये।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने बताया है कि चौथे चरण में लोकसभा संसदीय क्षेत्र क्रमांक-21 देवास (अजा) में 9 अभ्यर्थी, क्रमांक-22 उज्जैन (अजा) में 9 अभ्यर्थी, क्रमांक-23 मंदसौर में 8 अभ्यर्थी, क्रमांक-24 रतलाम (अजजा) में 13 अभ्यर्थी, क्रमांक-25 धार (अजजा) में 8 अभ्यर्थी, क्रमांक-26 इंदौर में 23 अभ्यर्थी, क्रमांक-27 खरगोन (अजजा) में 6 अभ्यर्थी एवं क्रमांक-28 खण्डवा में 14 अभ्यर्थी के नाम निर्देशन-पत्र संवीक्षा के बाद विधिमान्य पाये गये। संवीक्षा में लोकसभा संसदीय क्षेत्र क्रमांक-22 उज्जैन (अजा), क्रमांक-23 मंदसौर, क्रमांक-24 रतलाम

(अजजा) एवं क्रमांक-25 धार (अजजा) में दो-दो अभ्यर्थी एवं क्रमांक-26 इंदौर में 3 अभ्यर्थी संवीक्षा उपरांत विधिनुरूप न होने के कारण अस्वीकृत किये गये।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजन ने बताया कि नामांकन पत्र दाखिल किये गये अभ्यर्थियों के शपथ पत्र एवं अन्य जानकारियां भारत निर्वाचन आयोग की वेबसाइट की लिंक https://affidavit.eci.gov.in/ पर देखी जा सकती हैं। उन्होंने कहा कि नाम निर्देशन पत्र भर चुके प्रत्याशी सोमवार, 29 अप्रैल तक अपने नाम वापस ले सकेंगे। चौथे चरण के लिए सोमवार, 13 मई को मतदान होगा।

राष्ट्रीय कृषि अखबार कृषक जगत के नवीनतम अंग्रेजी प्रकाशन ग्लोबल एग्रीकल्चर का अवलोकन करते हुए मप्र के कृषि उत्पादन आयुक्त श्री एस.एन. मिश्रा

वरिष्ठ सचिव समिति का पुनर्गठन

भोपाल। राज्य शासन ने विभागों के विधायी प्रस्तावों का परीक्षण करने के लिए वरिष्ठ सचिव समिति का पुनर्गठन किया है। समिति में मुख्य सचिव, अपर मुख्य सचिव,नर्मदा घाटी विकास/जल संसाधन, डॉ. राजेश राजौरा, प्रमुख सचिव, गृह,श्री संजय दुबे, प्रमुख सचिव, नगरीय विकास एवं आवास, श्री नीरज मंडलोई, प्रमुख सचिव, सामान्य प्रशासन, श्री मनीष रस्तोगी, प्रमुख सचिव, वित्त, श्री मनीष सिंह, सचिव, विधि एवं विधायी कार्य श्री धर्मपाल सिंह शिवाच, वरिष्ठ सचिव समिति में होंगे।

13 दस्तावेजों में से एक दिखाकर कर सकेंगे मतदान

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने बताया कि लोकसभा निर्वाचन 2024 में यदि किसी मतदाता के पास मतदाता सूचना पर्ची नहीं है और उसका नाम मतदाता सूची में दर्ज है, तो 13 दस्तावेजों में से कोई एक दस्तावेज दिखाकर मतदाता मतदान कर सकेंगे।

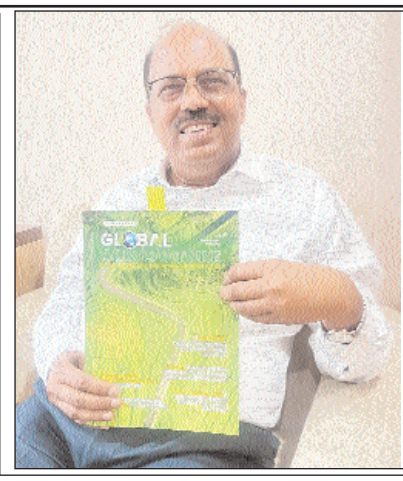

13 वैकल्पिक दस्तावेज: फोटोयुक्त वोटर आईडी कार्ड, आधार कार्ड, पेन कार्ड, दिव्यांग यूनिक आईडी कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, मनरेगा जॉब कार्ड, पेंशन दस्तावेज (फोटो सहित), पासपोर्ट, पासबुक (फोटो सहित बैंक/डाकघर द्वारा जारी), फोटोयुक्त सर्विस पहचान पत्र (केन्द्र/राज्य सरकार/सार्वजनिक उपक्रम/पब्लिक लिमिटेड कंपनियों द्वारा जारी), सांसद, विधायक और विधान परिषद सदस्यों को जारी आधिकारिक पहचान पत्र, एनपीआर के अंतर्गत आरजीआई द्वारा जारी स्मार्ट कार्ड, स्वास्थ्य बीमा स्मार्ट कार्ड (श्रम मंत्रालय की योजना के अंतर्गत जारी) में से कोई भी एक दस्तावेज दिखाकर मतदान कर सकते हैं। उन्होंने सभी मतदाताओं से उत्साह के साथ मतदान करने का आग्रह किया है।

प्रदेश में मूंग की बोनी 7 लाख हेक्टेयर में हुई

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल (कृषक जगत)। मध्य प्रदेश में इस वर्ष 13 लाख 24 हजार हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में जायद फसलें लेने का लक्ष्य रखा गया है। इसके विरुद्ध 22 अप्रैल तक 7.91 लाख हे. से अधिक क्षेत्र में बोनी हो गई है। जो लक्ष्य के विरुद्ध लगभग 60 फीसदी है। जायद में मुख्य रूप से मूंग, मूंगफली, मक्का, उड़द एवं धान फसल जायद में ली जाती है। सबसे प्रमुख एवं किसानों को मुनाफा देने वाली फसल मूंग है जिसे जायद में सबसे अधिक क्षेत्र में प्रदेश के किसान अपनाने लगे हैं। चालू जायद वर्ष 2024 में लगभग 11 लाख 58 हजार हेक्टेयर में मूंग लेने का लक्ष्य रखा गया है इसके विरुद्ध अब तक 6.92 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में मूंग की बोनी हो गई है। वहीं गत वर्ष अब तक 6.02 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में मूंग फसल ली गई थी।

कृषि विभाग के मुताबिक देश एवं प्रदेश में सबसे अधिक मूंग फसल लेने वाला नर्मदापुरम जिला है। इस वर्ष यहां लगभग

2.95 लाख हेक्टेयर में मूंग लेने का लक्ष्य रखा गया है। इसी प्रकार रायसेन, हरदा, नरसिंहपुर, सीहोर, जबलपुर, देवास, गुना, सागर एवं कटनी जिले में भी मूंग सर्वाधिक मात्रा में ली जाती है। कुल मिलाकर राज्य में 11 लाख 58 हजार हेक्टेयर मूंग लक्ष्य के विरुद्ध अब तक 6 लाख 92 हजार हेक्टेयर में मूंग बोई गई है जबकि गत वर्ष इस अवधि में 6 लाख 2 हजार 265 हेक्टेयर में बोनी हुई थी।

कृषि विभाग के अनुसार प्रदेश में जायद की अन्य फसलों की बोनी के तहत अब तक मूंगफली 8192 हेक्टेयर में, मक्का 10497 हेक्टेयर, उड़द 40375 हेक्टेयर एवं ग्रीष्मकालीन धान 39193 हेक्टेयर में बोई जा चुकी है।

म.प्र. में जायद की बोनी

22 अप्रैल 2024 (हेक्टे. में)

फसल	लक्ष्य	बुवाई
मूंग	1158758	692853
उड़द	87816	40375
धान	48565	39193
मक्का	12925	10497
मूंगफली	16824	8192

जैन पाईप
No. 1
कंपनी भारत की,
जिसने सिंचाई, पोयजल आपूर्ति, बुनियादी ढांचे, औद्योगिक, प्लंबिंग और जल निकासी अनुप्रयोगों के लिए प्लास्टिक पाइप और फिटिंग की विस्तृत श्रृंखला प्रदान की।

चाहे पानी हो या सीवेज,
बुनियादी ढ़ाचे या सिंचाई के लिए..
जैन पाइप आपको संपूर्ण पाइपिंग समाधान प्रदान करता है
जैन पीवीसी पाईप
सही आकार, सही लम्बाई, सही वजन और सही मोटाई!
जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि.
छोटे छोटे कदम, आसमान छूने का दम!®
जैन पाईप®
पूछताछ और उपयुक्त समाधान के लिए संपर्क करें
JAIN Mobile App
मो: +91- 9422773585; टोल फ्री: 1800 599 5000
JAIN Website link
मध्यप्रदेश- विवेक डांगरीकर: 9406802800; जावेद खान: 9406802820; आनंद जैन: 9406802828; विकास नेमा-9406802848. राजस्थान- भरत सोनी: 9530390821;
छत्तीसगढ़- गिरीष मख़वाणा: 9422776835.
जैन कॉलम पाईप | जैन केसिंग पाईप | जैन प्लम्बिंग | जैन पीई पाइप

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक **विजय कुमार बोन्द्रिया** द्वारा 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल से प्रकाशित एवं कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, भोपाल (मध्य प्रदेश) से मुद्रित, **सम्पादक : सुनील गंगराड़े,** फोन : 0755-4248100, 2554864, फैक्स : 0755-2571449. E-mail-info@krishakjagat.org इस अंक का मूल्य रु. 12/- वार्षिक शुल्क रु. 600/-.भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रमांक 1832/57

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े
अमृत जगत
समय पर अपनी वस्तु दूसरे को देनी चाहिए, और दूसरे की वस्तु स्वयं लेनी चाहिए। - विशुद्धिमग्ग

राष्ट्र और लोकतंत्र के हित में मतदान जरूर करें

18वीं लोकसभा के चुनाव की सरगर्मियां तेज हो गई हैं। पहले चरण में 102 और दूसरे चरण में 88 संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान सम्पन्न हो चुका है। पहले चरण में 21 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 62.87 प्रतिशत और दूसरे चरण में 63 प्रतिशत से अधिक मतदान हुआ है जो वर्ष 2019 में हुए लोकसभा के चुनाव में औसत मतदान से करीब 5 प्रतिशत कम रहा है। जबकि वर्ष 2019 में औसत मतदान 67.40 प्रतिशत मतदान हुआ था। भारत के चुनाव आयोग द्वारा मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए किए गए तमाम प्रयासों के बावजूद मतदान के प्रति मतदाताओं की उदासीनता वाकई चिंताजनक है। सभी राजनीतिक दलों को भी इस दिशा में नए सिरे से विचार मंथन करना होगा कि आखिर मतदाता, मतदान क्यों नहीं कर रहे हैं? मतदान नहीं करने वाले मतदाता किस वर्ग यानी निम्न, मध्यम या उच्च वर्ग के हैं। मतदान नहीं करने के पीछे उनका उद्देश्य क्या है? मतदान न करने के अनेक कारण हो सकते हैं जिनका विश्लेषण करना अनिवार्य है।

सबसे पहले मतदाता सूची को त्रृटिरहित करना अनिवार्य है। मतदाता परिचय पत्र को आधार के साथ जोड़ने के बाद भी यदि किसी मतदाता के एक से अधिक परिचय पत्र हैं, मतदाता के अलग-अलग स्थान पर मतदाता सूची में नाम दर्ज हैं। ऐसे प्रकरणों को तुरंत सुधारने की आवश्यकता है। यह काम केवल बीएलओ के भरोसे नहीं किया जा सकता। कंप्यूटर और सॉफ्टवेयर के जरिए मतदाता सूची को सौ फीसदी त्रृटिरहित करना संभव है। काम की तलाश में दूसरे शहरों और राज्यों में जाने वाले प्रवासी मजदूरों के साथ निजी और शासकीय सेवा के कर्मचारी भी मतदान करने से वंचित रह जाते हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह भी है कि प्राय: सभी प्रवासी मजदूरों के मतदाता सूची में नाम उनके मूल निवास स्थान पर ही होते हैं जिसके कारण वे केवल मतदान करने अपने गांव/मूल निवास स्थान नहीं जा पाते हैं। इसी तरह अन्य शहरों और राज्यों में शासकीय या निजी संस्थानों में कार्य करने वाले भी मतदान करने अपने मूल स्थान पर अथवा जहां मतदाता सूची में नाम है, वहां नहीं जा पाते हैं। हालांकि मतदान के दिन अवकाश रहता है लेकिन दूरी और अन्य कारणों से बहुत कम ही मतदाता अपने गृह नगर जाकर मतदान करते हैं।

चुनाव आयोग ने जब से इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) में

नोटा (नन ऑफ द अबव-इनमें से कोई नहीं) विकल्प उपलब्ध कराया है। नोटा का बटन दबाने वाले मतदाताओं की संख्या में इजाफा हो रहा है। नोटा विकल्प का उपयोग करने के पीछे मुख्य कारण यह हो सकता है कि जितने भी उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं, उनके मापदंडों पर कोई भी खरा नहीं उतर रहे हैं। हो सकता है ऐसे मतदाताओं की व्यवस्था से नाराजगी हो जिसके कारण वे विरोध स्वरूप नोटा की बटन का उपयोग करते हैं।

इन सब परिस्थितियों के मद्देनजर सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि मतदाताओं को मतदान केंद्र तक लाने के लिए क्या प्रयास किए जाएं? वैसे अब चुनाव आयोग के निर्देशानुसार मतदान केंद्रों पर मतदाताओं की सुविधा के लिए बेहतर व्यवस्था की जाने लगी है। आदर्श मतदाता केंद्र भी बनाए जाते हैं। 80 वर्ष से अधिक आयु के मतदाताओं को घर पर ही मतदान करने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। बावजूद इसके औसत 100 में से 35 से 40 मतदाता अपने मताधिकार का उपयोग नहीं कर रहे हैं। 100 फ़ीसदी मतदान के लिए या तो कड़ाई बरती जाए या उन्हें ओटीपी पद्धति से मोबाइल के जरिए मतदान करने की सुविधा दी जाए। यदि मोबाइल के जरिए ओटीपी प्रक्रिया से मतदान करने की सुविधा उपलब्ध करा दी जाए तो भी उदासीन मतदाता क्या मतदान करेंगे? इसमें भी शक की गुंजाइश बनी रहती है। फिर इसका एकमात्र तरीका यही है कि मतदान को अनिवार्य करना चाहिए। लेकिन इससे संवैधानिक संकट भी उत्पन्न हो सकता है। कुछ लोग न्यायालय भी जा सकते हैं। अब एकमात्र उपाय यही बचता है कि मतदाताओं को मतदान करने के प्रति जागरूक किया जाए। जो मतदाता मतदान नहीं करते हैं उनसे पूछा जाना चाहिए कि उन्होंने मतदान क्यों नहीं किया? इनका विश्लेषण कर सर्वसम्मति से कोई सर्वमान्य हल निकाला जा सकता है।

महत्वपूर्ण बात यह भी है कि जहां मतदान का प्रतिशत अधिक होता है, क्या वहां उम्मीदवारों की छवि का भी कोई योगदान है। आपराधिक छवि वाले तो जेल में रहकर भी चुनाव जीत जाते हैं। फिर भी यदि स्वच्छ और ईमानदार छवि वाले उम्मीदवार हो तो इस मिथक को तोड़ा जा सकता है कि बिना साम, दाम, दंड और भेद के राजनीति करना संभव नहीं है। यदि मतदाताओं को स्वच्छ और स्वस्थ लोकतंत्र के लिए उनकी जिम्मेदारी के प्रति जागरूक किया जाए तो निश्चित ही इसका राजनीतिक दलों पर प्रभाव पड़ेगा और वे आपराधिक छवि वाले उम्मीदवारों का चुनावी समर में उतारने से पहले सैकड़ों बार सोचेंगे। एक महत्वपूर्ण बात यह भी ध्यान में रखनी चाहिए की व्यक्तिगत विचारधारा से अलग होकर राष्ट्रीय हित में बेहतर उम्मीदवारों को अपना जनप्रतिनिधि बनाना चाहिए। यदि ऐसा लगता है कि कोई भी उम्मीदवार आपके मापदंड पर खरा नहीं है तब भी निरपेक्ष भाव से उम्मीदवारों का आकलन करें और जो थोड़ा भी बेहतर लगता है, उसे अपना अमूल्य मत जरूर दें। स्वच्छ और स्वस्थ लोकतंत्र को बनाए रखने के लिए प्रत्येक मतदाता का मतदान करना नैतिक कर्तव्य है।

कृषि चुनौतियों से निपटने के लिए किसान मजदूर आयोग (केएमसी) का गठन

वरिष्ठ पत्रकार इस मुहिम में शामिल हुए

केएमसी एक स्वतंत्र आयोग का रूप लेने से पहले 'किसानों के लिए राष्ट्र' के बैनर तले विशेषज्ञों, किसानों, श्रमिक संघों और कृषि श्रमिक संघों के बीच चर्चा से उभरा हैं। अन्य आयोगों के विपरीत, केएमसी का लक्ष्य श्रमिकों और किसानों को कृषि-नीति चर्चा में शामिल करना है। इस आयोग का राष्ट्रीय संयोजक जगमोहन सिंह को चुना गया है और अन्य सदस्यों में विजू कृष्णन, नवशरण कौर, रोमा मलिक, दिनेश अबरोल, पी. साईनाथ, थॉमस फ्रैंको और निखिल डे शामिल हैं।

आयोग के मुख्य उद्देश्य

केएमसी का '2024 का एजेंडा' उत्पादन की बढ़ती लागत, आय वृद्धि, व्यापार और निवेश (डब्ल्यूटीओ और एफटीए), ग्रामीण ऋण और बीमा, सामान्य पूल संसाधन, पारिस्थितिक चुनौतियां, भोजन और पोषण, महिला किसानों और ग्रामीण गैर-कृषि उद्यमों जैसे विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने पर केंद्रित है।

वरिष्ठ पत्रकार और रेमन मैग्सेसे पुरस्कार विजेता, पी. साईनाथ ने शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन के दौरान किसानों के खिलाफ हवाई ड्रोन युद्ध के सरकार के उपयोग पर प्रकाश डालते हुए, एम. एस. स्वामीनाथन के महत्वपूर्ण योगदान, न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर स्वामीनाथन रिपोर्ट को खारिज करने पर अपनी चिंता व्यक्त की। उन्होंने किसान आंदोलन पर सरकार की प्रतिक्रिया की आलोचना करते हुए कहा कि प्रस्तावित पैकेज कृषि कानूनों का एक छिपा हुआ रूप था और पांच फसलों तक एमएसपी का विस्तार वास्तव में मौजूदा 23 फसलों की तुलना में कमी लाएगा।

केएमसी का लक्ष्य बिजली संशोधन अधिनियम, बुनियादी अधिकार के रूप में पानी पर नीति, पेंशन योजनाएं, वन अधिकार अधिनियम कार्यान्वयन, मनरेगा कार्यान्वयन, मत्स्य पालन नीतियां, वर्षा आधारित शुष्क भूमि कृषि, जलवायु संकट, जैव विविधता हानि और बीज प्रणाली जैसे मुद्दों को संबोधित करना भी है।

महिला कृषि श्रमिकों सहित महिला किसानों के लिए भूमि अधिकारों, मजदूरी से परे बुनियादी अधिकारों को शामिल करने वाले ग्रामीण श्रमिकों के अधिकारों और कृषि संकट, पर्यावरणीय गिरावट और जलवायु संकट के अंतर्संबंध पर चर्चा करने के लिए विशेष परामर्श की योजना बनाई गई है।

आम चुनावों की बेला में, नई दिल्ली में प्रेस क्लब ने हाल ही में किसान मजदूर आयोग (केएमसी) नामक एक नए आयोग का अनावरण किया। केएमसी का प्राथमिक उद्देश्य कृषि में अंतर्निहित संरचनात्मक मुद्दों का समाधान करना है जो इस क्षेत्र को चुनौती दे रहे हैं। इसका उद्देश्य स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों से आगे बढ़कर कृषि आदानों की आपूर्ति पर बढ़ते कॉर्पोरेट नियंत्रण से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों को ध्यान में रखना है, जिससे किसानों की उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है और कृषि उपज बाजारों पर प्रभाव पड़ा है, जिसके परिणामस्वरूप किसानों की आय में कमी आई है।

लैंगिक असमानता पर दिया जोर

केएमसी के भीतर महिलाओं पर शोध का नेतृत्व करने वाली नवशरण कौर ने कृषि में लैंगिक असमानता पर प्रकाश डाला, जहां महिलाएं, लगभग 60 प्रतिशत कार्यबल होने के बावजूद, न्यूनतम भूमि की मालिक हैं और अक्सर उन्हें किसानों के रूप में मान्यता नहीं दी जाती है। उन्होंने कृषि में महिलाओं के लिए संसाधनों तक पहुंच बढ़ाने, गरीब और भूमिहीन महिलाओं को भूमि पुनर्वितरण और पोषण में सुधार के लिए खाद्य और सब्जी क्षेत्रों के निर्माण के बारे में बात करते हुए इस असमानता को दूर करने की आवश्यकता पर जोर दिया। केएमसी ने उत्पादन लागत, आय स्रोत, निवेश, कृषि प्रणाली, कृषि अनुसंधान और विकास, कृषि-डिजिटलीकरण, ग्रामीण श्रम, पोषण और खाद्य सुरक्षा, कॉमन्स, व्यापार और निवेश, ऋण और बीमा से संबंधित विभिन्न मुद्दों से निपटने के लिए विभिन्न कार्य समूहों की स्थापना की है। आयोग के एक अन्य सदस्य दिनेश अब्रोल ने कृषि संकट का मूल कारण घरेलू और विदेशी निगमों द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों का अधिग्रहण बताया। उन्होंने कृषि विस्तार पर कृषि मंत्रालय के साथ सहयोग करने वाले अमेज़ॉन जैसे उदाहरणों का हवाला दिया, जो कृषि के तेजी से कॉर्पोरेटीकरण का संकेत देता है। उन्होंने इस प्रवृत्ति के नकारात्मक परिणामों पर जोर दिया, जिसमें रासायनिक उपयोग और इनपुट निर्भरता में वृद्धि शामिल है, जो किसानों पर बोझ डालती है और देश की पारिस्थितिकी को नुकसान पहुंचाती है।

किसान मजदूर आयोग (केएमसी) भारत में कृषि के सामने आने वाली जटिलताओं और चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयास का प्रतिनिधित्व करता है। विशेषज्ञों, किसानों और श्रमिक संघों को एक साथ लाकर, आयोग का लक्ष्य नीति को प्रभावित करना, संसाधनों तक समान पहुंच को बढ़ावा देना और किसानों और ग्रामीण समुदायों की बेहतरी के लिए स्थायी समाधान ढूंढना है।

नरवाई बचाओ-खाद बनाओ

वर्तमान में गेहूं की खेती में यंत्रीकरण का उपयोग बढ़ने से गेहूं की कटाई कम्बाइन हारवेस्टर ट्रैक्टर द्वारा आसानी से समय पर की जा रही है। किन्तु, उससे गेहूं डंठल में याने नरवाई एवं भूसा खेत में ही छोड़ दिया जाता है जिसको किसान भाई कचरा समझकर आग से जला देते हैं। गेहूं की नरवाई में आग लगाने से सिर्फ नरवाई ही नही जलती उसमें जमीन के अंदर उपस्थित सभी सूक्ष्म जीव तापक्रम बढ़ने से समाप्त हो जाते हैं। परिणामस्वरुप जली हुई भूमि मृतावस्था में परिणित हो जाती है, जिसको सजीव होने में कई वर्ष लग जाते हैं। कहा जाये प्रायः सदियों से सूक्ष्म जीवों द्वारा पोषित मृदा को कुछ घंटों में ही जलाकर राख में परिवर्तित कर देते हैं। नरवाई जलाना न सिर्फ किसान के लिए हानिकारक है। अपितु प्रकृति, पर्यावरण, भूमि का भी प्रदूषण होता है। खेतों में आग लगने से प्रत्यक्ष रुप से बड़ा नुकसान होता है जिसमें कुछ निम्नानुसार है।

- भूमि की उर्वराशक्ति नष्ट हो जाती है।
- कीमती भूसे की हानि होती है।
- हमारे मित्र कीट केंचुआ,सांप सूक्ष्म जीव आदि आग में नष्ट हो जाते हैं।
- मिट्टी की संरचना खराब हो जाती है।
- भूमि की उपजाऊ शक्ति बढ़ाने वाले सूक्ष्म जीव नष्ट होते हैं।
- भूमि कड़ी होती है,जिसमें भूमि की जल धारण क्षमता कम होकर जुताई में अधिक,ऊर्जा की खपत होती है।
- पर्यावरण दूषित होता है तथा धरती का तापमान बढ़ता है।
- कार्बन की मात्रा कम हो जाती है। उपजाऊपन के लिए कार्बन अधिक आवश्यक है।
- नरवाई जलाने से जन-धन तथा जंगलों के नष्ट होने की संभावना होती है।
- नरवाई जलाने से होने वाले नुकसान से बचें। किसान भाई नरवाई में आग न लगाएं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

स्वाइल हेल्थ कार्ड के अनुसार डालें पोषक तत्व

स्वाइल हेल्थ कार्ड में मृदा नमूनों के विश्लेषण परिणामों के आधार पर 12 मानकों का आकलन किया जाता है जिसके आधार पर 9 तत्वों जिसमें नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश मुख्य तत्वों का स्तर कम/मध्यम/उच्च तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों में जिंक, आयरन, कॉपर, मैग्नीज, बोरान एवं सल्फर तत्वों का स्तर पर्याप्त-अपर्याप्त के रूप में दर्शाया जाता है।

मृदा में मुख्य पौषक तत्वों के विश्लेषण परिणाम के आधार पर नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश की अनुशंसा,उर्वरक उपलब्धता एवं उपयोगिता आधारित उर्वरकों की मात्रा की अनुशंसा स्वाइल हेल्थ कार्ड में की जाती है।

मृदा में मुख्य तत्व नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश की कमी होने पर मुख्य तत्वों की सामान्य सिफारिश से एक चौथाई मात्रा बढ़ाकर उपयोग करें। मृदा में आर्गेनिक कार्बन के स्तर को बनाये रखने के लिए 40 टन कम्पोस्ट प्रति हेक्टेयर के मान से उपयोग करें।

मृदा के सूक्ष्म पौषक तत्वों के विश्लेषण परिणाम का आकलन पर्याप्त/अपर्याप्त रुप में किया जाता है। मिट्टी में सूक्ष्म पौषक तत्व का स्तर पर्याप्त होने की दशा में सूक्ष्म तत्वों की अनुशंसा/सिफारिश नहीं की जाती है। मृदा में तत्वों की उपलब्धता का स्तर, निर्धारित सीमा से कम पाये जाने की स्थिति/अपर्याप्त होने पर सभी फसलों हेतु पौषक तत्वों के समान मात्रा की अनुशंसा की जाती है, जो निम्नानुसार है –

क्र.	सूक्ष्म तत्व	मृदा में तत्वों की उपलब्धता का स्तर	स्वाइल हेल्थ कार्ड में उर्वरक अनुशंसा
1.	जिंक	0.6 पीपीएम	मृदा में जिंक की कमी होने पर 15-25 किलो ग्राम जिंक सल्फेट का उपयोग किया जाता है। गेहूं, धान जैसे धान्य फसल क्षेत्र में सामान्यतः जिंक तत्व की कमी पायी जाती है।
2.	आयरन	4.5 पीपीएम	मृदा में आयरन तत्व की कमी होने पर 25-50 किलो ग्राम फेरस सल्फेट प्रति हेक्टेयर की अनुशंसा के आधार पर फेरस सल्फेट उपयोग करें।
3.	कॉपर	0.2 पीपीएम	कॉपर तत्व की मृदा में कमी होने पर 5-10 किलो ग्राम कॉपर सल्फेट प्रति हेक्टेयर की अनुशंसा की जाती है।
4.	मैग्नीज	2.0 पीपीएम	मैग्नीज तत्व की मृदा में कमी होने पर 10-25 किलो ग्राम मैग्नीज सल्फेट प्रति हेक्टेयर का उपयोग करें।
5.	बोरान	0.5 पीपीएम	मृदा में बोरान तत्व की कमी होने पर 5-10 किलो ग्राम बोरेक्स प्रति हेक्टेयर के मान से उपयोग करें।
6.	सल्फर	10 पीपीएम	मृदा में सल्फर तत्व की कमी पाये जाने पर 140-280 किलो ग्राम जिप्सम प्रति हेक्टेयर की अनुशंसा स्वाइल हेल्थ कार्ड में की जाती है। तिलहनी फसल क्षेत्र में सामान्यतः सल्फर तत्व की कमी पाई जाती है।

मृदा में मुख्य पोषक तत्वों की कमी होने पर पोषक तत्व अनुशंसा

क्र.	फसल	पोषक तत्व सामान्य अनुशंसा (कि.ग्रा./हे.)			मृदा में कमी होने पर उर्वरक अनुशंसा (कि.ग्रा./हे.)	
		नाइट्रोजन	फास्फोरस	पोटाश	प्रथम विकल्प	द्वितीय विकल्प
1.	गेहूं असिंचित	40	20	10	यूरिया-67, डीएपी-50, म्यूरेट ऑफ पोटाश-17	यूरिया-75, एनपीके (12:32:16) -50, म्यूरेट ऑफ पोटाश-4
	गेहूं सिंचित	120	60	30	यूरिया-200, डीएपी-125, म्यूरेट ऑफ पोटाश-50	यूरिया-200, एनपीके (12:32:16) - 200
2.	सरसों असिंचित	40	20	10	यूरिया-87, सिंगल सुपर फास्फेट-125, म्यूरेट ऑफ पोटाश-17	यूरिया-75, एनपीके (12:32:16) -50, म्यूरेट ऑफ पोटाश-4
	सरसों सिंचित	80	40	20	यूरिया-175, सिंगल सुपर फास्फेट-250, म्यूरेट ऑफ पोटाश-35	यूरिया-150, एनपीके (12:32:16) -100, सिंगल सुपर फॉस्फेट-50, म्यूरेट ऑफ पोटाश-8
3.	चना असिंचित	20	40	20	एनपीके (12:32:16)-150, जिप्सम-100	यूरिया-44, सिंगल सुपर फास्फेट-250, म्यूरेट ऑफ पोटाश-33
	चना सिंचित	20	60	20	एनपीके 12:32:16)-188	यूरिया-44, सिंगल सुपर फास्फेट-375, म्यूरेट ऑफ पोटाश-33
4.	मसूर	20	60	20	एनपीके 12:32:16)-188	यूरिया-44, सिंगल सुपर फास्फेट-375, म्यूरेट ऑफ पोटाश-33
5.	मटर	20	60	20	एनपीके (12:32:16)-188, जिप्सम-100	यूरिया-44, सिंगल सुपर फास्फेट-375, म्यूरेट ऑफ पोटाश-33
6.	सोयाबीन	20	60	20	यूरिया-44, सिंगल सुपर फास्फेट 375, म्यूरेट ऑफ पोटाश-33	डीएपी-100, एसएसपी-100, म्यूरेट आफ पोटाश-33
7.	धान	120	60	40	यूरिया-210, डीएपी-130, म्यूरेट आफ पोटाश-66	यूरिया-221, सिंगल सुपर फास्फेट-100, डीएपी-100, म्यूरेट ऑफ पोटाश-66
8.	मूंगफली	20	60	20	डीएपी-100, एसएसपी-100, म्यूरेट ऑफ पोटाश-33	यूरिया-44, सिंगल सुपर फास्फेट-375, म्यूरेट ऑफ पोटाश-33
9.	अरहर	20	60	20	यूरिया-44, सिंगल सुपर फास्फेट-375, म्यूरेट ऑफ पोटाश-33	एनपीके (12:32:16) 188

मशरूम की किस्में एवं उत्पादन तकनीक

- डॉ. हिरदेश कुमार, सहायक प्रोफेसर
- अरुण साहू, सहायक प्रोफेसर
- कुमारी नम्रता चौहान, सहायक प्रोफेसर
- डॉ. जे. पी. ठाकुर, विभागाध्यक्ष
  कृषि विद्यालय विक्रांत विश्वविद्यालय, ग्वालियर
- डॉ. रश्मि बाजपेयी, वरिष्ठ वैज्ञानिक
  (उद्यान) कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालियर

arunsahu0909199625@gmail.com

विश्व में मशरूम की खेती हजारों वर्षों से की जा रही है, जबकि भारत में मशरूम के उत्पादन का इतिहास लगभग तीन दशक पुराना है। भारत में 10-12 वर्षों से मशरूम के उत्पादन में लगातार वृद्धि देखी जा रही है। इस समय हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक और तेलंगाना व्यापारिक स्तर पर मशरूम की खेती करने वाले प्रमुख उत्पादक राज्य है। मशरूम की खेती को बढ़ावा देने के लिए मशरूम की खेती करने की विधि, मशरूम बीज उत्पादन तकनीक, मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण, मशरूम उत्पादन और प्रसंस्करण इत्यादि विषयों पर किसानों को कृषि विश्वविद्यालयों और अन्य प्रशिक्षण संस्थाओं द्वारा पूरे वर्ष प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। मशरूम की खेती के लिए महिलाओं को अधिक प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसके अंतर्गत राज्य सरकार प्रदेश के किसानों को मशरूम की खेती के लिए लागत का 50 प्रतिशत अनुदान भी दे रही है।

मशरूम के प्रकार

खाने योग्य मशरूम : ऑयस्टर मशरूम, धान पुआल मशरूम, सफेद बटन

अखाद्य खाद्य (टॉडस्टूल) – जहरीले मशरूम को टॉडस्टूल के नाम से जाना जाता है।

अम्निता फ़ैलोराइड्स,अम्निता मुस्कारिया, अम्निता पैंथरिना,अम्निता सिट्रीना

खेती की प्रक्रिया

मशरूम की खेती में 6 मुख्य चरण शामिल हैं

चरण 1- खाद – खाद दो प्रकार की होती है –

सिंथेटिक खाद – यह भूसी, भूसा, यूरिया, कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट या अमोनियम सल्फेट और जिप्सम आदि कच्चे माल से बनी होती है।

चरण 1 कंपोस्टिंग में हमने कच्चे माल को मिलाकर और गीला करके खाद बनाई। एक बार जब सामग्री गीली हो जाती है और सूक्ष्मजीवों की वृद्धि और प्रजनन के परिणामस्वरूप एरोबिक किण्वन शुरू हो जाता है। चरण 1 खाद इस खाद को तैयार होने में कम से कम 5-18 दिन लगते हैं और यह कितने दिनों में पूरी तरह से तैयार हो जाएगी यह कच्चे माल पर निर्भर करता है।

चरण 2 कंपोस्टिंग – चरण 2 कंपोस्टिंग का मुख्य फोकस चरण 1 के दौरान बने अमोनिया को पास्चुरीकरण और हटाना है। 0.7 से अधिक सांद्रता माइसेलियम स्पॉन वृद्धि के लिए खतरनाक है, इसलिए अमोनिया को हटाना महत्वपूर्ण है।125°F से 130°F सबसे उत्तम तापमान है क्योंकि इस सीमा में डी-अमोनिफाइंग जीव अच्छी तरह से विकसित होते हैं। चरण 2 के अंत में तापमान लगभग 75°F से 80°F हो। नाइट्रोजन की मात्रा 2.0 से 2.4% तथा नमी की मात्रा 68 से 72% हो।

स्पॉनिंग- मशरूम माइसेलियम को तैयार क्यारियों में बोने की प्रक्रिया को आमतौर पर स्पॉनिंग के रूप में जाना जाता है। हम स्पॉनिंग दो तरह से कर सकते हैं, ट्रे पर खाद फैलाकर या ट्रे भरने से पहले अनाज के स्पॉन को खाद में मिलाकर। एक बार स्पॉनिंग हो जाने के बाद हम ट्रे को अखबार से ढंक देते हैं और फिर नमी की मात्रा बनाए रखने के लिए थोड़ा पानी छिड़कते हैं।

केसिंग- जब हम बगीचे की मिट्टी में बारीक कुचला हुआ सड़ा हुआ गोबर मिलाते हैं तो उसे केसिंग मिट्टी कहते हैं। इसमें पीएच क्षारीय पक्ष पर हो। आवरण वाली मिट्टी को अच्छी तरह से कीटाणुरहित हो और हानिकारक कीट, नेमाटोड, कीट आदि को मारने में सक्षम हो। फॉर्मेलिन समाधान के साथ मिट्टी का उपचार करके या भाप से हम इसे कीटाणुरहित कर सकते हैं। आवरण वाली मिट्टी को बहुत अधिक हवा की आवश्यकता होती है। फैलने के बाद तापमान 72 घंटों तक 25 डिग्री सेल्सियस पर बनाए रखा जाना चाहिए।

पिनिंग-पिन तब विकसित होती है जब कमरे में CO_2 की मात्रा 0.08% से कम होती है। शुरुआत में होने वाला मशरूम राइजोमोफर बनने के बाद विकसित होता है। नवगठित मशरूम बहुत छोटे होते हैं। कमरे में ताजी हवा आने का समय बहुत महत्वपूर्ण है। कमरे में हवा को तब तक प्रवेश करने से रोकें जब तक कि माइसेलियम आवरण की सतह पर दिखना शुरू न हो जाए। जब पिन इनिशियल बनने लगे तो केसिंग में पानी देना बंद कर दें।

कटाई- हम मशरूम को 'फ्लश' में काटते हैं पहली कटाई 3 से 5 दिनों में हो जाती है और 15 से 20 किग्रा/वर्ग मीटर की उपज प्राप्त होती है। दूसरे फ्लश में 5 से 7 दिनों में फसल प्राप्त हो जाती है और पहले फ्लश की तुलना में 9 से 11 किलोग्राम/वर्ग मीटर थोड़ा कम उपज प्राप्त होती है। कुल उपज हमें लगभग 27 से 35 किलोग्राम प्राप्त होती है। हाथ से चुने गए मशरूम को संग्रहित किया जा सकता है और ताजा खाया जा सकता है।

भारत में उगाई जाने वाली मशरूम की किस्में विश्व में खाने योग्य मशरुम की लगभग 10000 प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें से 70 प्रजातियां हीं खेती के लिए उपयुक्त मानी जाती हैं। भारतीय वातावरण में मुख्य रुप से पांच प्रकार के खाद्य मशरुमों की व्यावसायिक स्तर पर खेती की जाती है। जिसका वर्णन निम्नलिखित है।

सफेद बटन मशरूम : सफेद बटन मशरुम की खेती पहले निम्न तापमान वाले स्थानों पर की जाती थी, लेकिन आजकल नई तकनीकियों को अपनाकर इसकी खेती अन्य जगह पर भी की जा रही है। सरकार द्वारा सफेद बटन मशरूम की खेती के प्रचार-प्रसार को भरपूर प्रोत्साहन दिया जा रहा है। भारत में अधिकतर सफेद बटन मशरुम की एस-11, टीएम-79 और होर्स्ट यू-3 उपभेदों की खेती की जाती है। बटन मशरूम के कवक जाल के फैलाव के लिए 22-26 डिग्री सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है। इस तापमान पर कवक जाल बहुत तेजी से फैलता है। बाद में इसके लिए 14-18 डिग्री सेल्सियस तापमान ही उपयुक्त रहता है। इसको हवादार कमरे, सेड, हट या झोपड़ी में आसानी से उगाया जा सकता है।

ढींगरी (ऑयस्टर) मशरूम : ढींगरी (ऑयस्टर) मशरूम की खेती वर्ष भर की जा सकती है। इसके लिए अनुकूल तापमान 20-30 डिग्री सेंटीग्रेट और सापेक्षित आर्द्रता 70-90 प्रतिशत चाहिए। ऑयस्टर मशरूम को उगाने में गेहूं व धान के भूसे और दानों का इस्तेमाल किया जाता है। यह मशरूम 2.5 से 3 महीने में तैयार हो जाता है। इसका उत्पादन अब पूरे भारत वर्ष में हो रहा है। ढींगरी मशरूम की अलग-अलग प्रजाति के लिए अलग-अलग तापमान की आवश्यकता होती है, इसलिए यह मशरुम पूरे वर्ष उगाई जा सकती है। 10 क्विंटल मशरूम उगाने के लिए कुल खर्च 50 हजार रुपये आता है। इसके लिए 100 वर्गफीट के एक कमरे में रैक लगानी होती है। वर्तमान में ऑयस्टर मशरूम 120 रुपए प्रति किलोग्राम से लेकर एक हजार रुपए प्रति किलोग्राम की दर से बाजार में बिक जाता है। मूल्य उत्पाद की गुणवत्ता पर निर्भर करता है।

दूधिया मशरूम : भारत में दूधिया मशरूम को ग्रीष्मकालीन मशरूम के रूप में जाना जाता है, जिसका आकार बड़ा व आकर्षक होता है। यह पैडीस्ट्रा मशरूम की तरह एक उष्णकटिबंधीय मशरूम है। इसकी कृत्रिम खेती के रुप में शुरुआत 1976 में पश्चिम बंगाल में हुई थी। अब, इस दूधिया मशरूम ने कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में लोकप्रियता हासिल की है। उड़ीसा सहित इन राज्यों की जलवायु स्थिति मार्च से अक्टूबर तक दूधिया मशरूम की खेती के लिए उपयुक्त होती है। हालांकि, कुछ राज्यों में किसानों द्वारा पैडीस्ट्रा मशरूम को वरीयता देने के कारण अभी तक इसका व्यवसायीकरण नहीं किया जा सका। वर्तमान में पैडीस्ट्रा मशरूम और शिटाके मशरूम की तरह भारत में दूधिया मशरूम को लोकप्रिय बनाने के लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

पैडीस्ट्रा मशरूम : पैडीस्ट्रा मशरूम को 'गर्म मशरूम' के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि यह अपेक्षाकृत उच्च तापमान पर तेजी से बढ़ने वाला मशरूम है। अनुकूल परिस्थितियों में इसका फसल चक्र 3-4 सप्ताह में पूरा हो जाता है। पैडीस्ट्रा मशरूम में स्वाद, सुगंध, नाजुकता, प्रोटीन और विटामिन और खनिज लवणों की उच्च मात्रा जैसे सभी गुणों का अच्छा संयोजन है, इस कारण इस मशरूम की स्वीकार्यता बहुत अधिक है, और इसकी लोकप्रियता सफेद बटन मशरूम से कहीं भी कम नहीं है। यह भारत के उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, झारखंड, छत्तीसगढ़ आदि प्रदेशों में उगाया जाता है। इसकी वृद्धि के लिए अनुकूल तापमान 28-35 डिग्री सेल्सियस तथा सापेक्षित आर्द्रता 60-70 प्रतिशत की आवश्यकता होती है।

शिटाके मशरूम : शिटाके मशरूम एक शानदार खाद्य एवं महत्वपूर्ण औषधीय मशरूम है। इसे व्यावसायिक और घरेलू उपयोग के लिए आसानी से उगाया जा सकता है। यह दुनिया में कुल मशरूम उत्पादन के मामले में दूसरे स्थान पर आता है। सफेद बटन मशरूम की तुलना में शिटाके मशरूम एक अति स्वादिष्ट और बनावट के अनुसार एक बेशकीमती मशरूम है। इसमें उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन और विटामिन (विशेष रूप से विटामिन बी) भरपूर मात्रा में होते हैं। इसमें वसा और शर्करा नहीं होती है इसलिए यह मधुमेह और हृदय रोगियों के उपभोग के लिए बेहतरीन समझा जाता है। इसे सागवान, साल और भारतीय किन्नु वृक्ष की ठोस भूसी पर आसानी से उगा सकते है।

सफेद बटन मशरूम: उत्तरी भारत में सफेद बटन मशरुम की मौसमी खेती करने के लिए अक्टूबर से मार्च तक का समय उपयुक्त माना जाता है। इस दौरान मशरूम की दो फसलें ली जा सकती हैं। बटन मशरूम की खेती के लिए अनुकूल तापमान 15-22 डिग्री सेंटीग्रेट एवं सापेक्षित आद्रता 80-90 प्रतिशत हो।

मशरूम कितने प्रकार की होती है

खाने योग्य मशरूम : मशरूम की हजारों प्रजातिओं में से कुछ प्रजातियाँ ऐसी हैं जिन्हें खाने में प्रयोग किया जाता है। भारत में सबसे ज्यादा खाई जाने वाली मशरूम का नाम है सफेद बटन मशरूम। मशरूम की इस प्रजाति को भारत के कुछ राज्यों में खुवी या खुंवी भी कहा जाता है। इसके बाद सबसे ज्यादा लोकप्रिय है सफेद मिल्की मशरूम, ये बटन मशरूम से ज्यादा स्वादिष्ट होने के साथ ही वजन में भी ज्यादा होती है। इसके बाद भारत में सबसे अधिक लोकप्रिय है सफेद ऑयस्टर मशरूम, ये एक ऐसी मशरूम है जिसे आप सुखा कर भी बेच सकते हैं।

मेडिसनल मशरूम : मशरूम की हजारों प्रजातियों में से कुछ प्रजातियां ऐसी हैं जिन्हें दवाओं में प्रयोग किया जाता है। यदि आप मेडिसनल मशरूम की खेती करना चाहते हैं तो आपको बता दें कि इनकी खेती के लिए एक अच्छी ट्रेनिंग के साथ ही खर्चा भी अधिक करना पड़ता है। जबकि इनके मुकाबले खाने वाली मशरूम की खेती में खर्चा कम आता है और इसे हर कोई कर सकता है।

जंगली मशरूम: हजारों में से मशरूम की कुछ प्रजातियां ऐसी हैं जिन्हें खाने से इंसान बीमार भी हो सकता है और मर भी सकता है, मशरूम की ऐसी प्रजातियों को अंग्रेजी में (Wild mushrooms) कहा जाता है। पुराने समय में लोग जंगली मशरूम का प्रयोग जहर के तौर पर भी करते थे,

धान की खेती के साथ मछली पालन

● डॉ. शुची गंगवार ● पीयूष श्रीवास्तव
● डॉ. प्रशांत सिंह कोराव ● डॉ. सुमित काकड़े
सहायक प्रोफेसर
कृषि संकाय आरकेडीएफ विवि., भोपाल
007peeyushrivastav@gmail.com

भारत में धान की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। पूरे देश में 36.95 मिलियन हेक्टेयर में धान की खेती होती है। देश में प्रमुख धान उत्पादक राज्यों में पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, हरियाणा, पंजाब, बिहार, छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखंड और तमिलनाडु हैं। कई बार धान फसल की कटाई के बाद किसानों को अगली फसल बोने के लिए लंबा इंतज़ार करना पड़ता है। ऐसे में इस लेख में हम आपको ऐसे तरीके के बारे में बताने जा रहे हैं, जिससे धान की खेती कर रहे किसान दोगुना मुनाफ़ा कमा सकते हैं। इस खास तरीके की खेती को धान संग मछली पालन (Fish-Rice Farming) कहा जाता है।

धान संग मछली पालन के तहत किसान एक साथ धान की खेती और मछली पालन कर सकते हैं। इस तरह की खेती का चलन चीन, बांग्लादेश, मलेशिया, कोरिया, इंडोनेशिया, फिलिपींस, थाईलैंड में बढ़-चढ़कर है। भारत में हालांकि ये तकनीक अभी कम प्रचलित है, लेकिन इसे बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत में भी झारखंड, छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश समेत कई इलाकों में धान संग मछली पालन के ज़रिए किसान दोगुनी कमाई कर रहे हैं।

भारत में मछली की प्रमुख नस्ल

मीठे पानी में मछली पालन के लिए विशेष जाति (नस्ल) की मछलियों का ही चयन किया जाता है। इनमें प्रमुख रूप से कतला, रोहू (लेबियो), म्रगल, आदि देशी मछलियाँ प्रमुख हैं। इसके अलावा विदेशी मछलियों में जैसे सिल्वर कार्प, कॉमन कार्प, ग्रासकार्प को सम्मिलित किया जाता है।

मछलियों के लिए भोजन सामग्री

जलाशय में मछलियों को दो प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है-

प्राकृतिक भोजन - यह सूक्ष्म पादप एवं सूक्ष्म जन्तु होते हैं, इनका उत्पादन नियमित होता रहे, इसके लिए कृत्रिम खाद एवं उर्वरक का उपयोग किया जाता है। इसके लिए जैविक खाद और मुर्गियों की बीट डाली जाती है। जल की अम्लीयता को कम करने के लिए चुने की अल्प मात्रा भी मिलाई जाती है। प्राकृतिक भोजन के साथ साथ मछलियों की उपयुक्त एवं तीव्र वृद्धि के लिए कृत्रिम भोजन का अपना महत्व है। इनमें चावल की भूसी, अनाज के टुकड़े, चावल का चापड़, सोयाबीन, खमीर, बादाम की खली आदि प्रमुख है।

जीरे का संचय - छोटी मछलियों को जीरा कहते हैं। जीरे की लम्बाई 1 से 1.5 इंच की होती है। तालाब में जीरे की निश्चित मात्रा ही डालें। तालाब में डालने से पूर्व इन्हें कुछ समय के लिए 3 प्रतिशत नमक अथवा पौटेशियम परमैगनेट के घोल में रखें जिससे ये परजीवी मुक्त हो सकें।

जीरा तीन-चार माह के बाद अंगुलिकाएं बन जाती है। इसकी लम्बाई तीन से चार इंच की होती है। यही अवस्था 6 से 12 माह में वृद्धि कर वयस्क मछली में बदल जाती है।

किस तरह का खेत सबसे बेहतर

इस तरह की खेती के लिए निचली ज़मीन वाले खेत का चुनाव किया जाता है। इस तरह के खेत में आसनी से पानी इकट्ठा रहता है। साथ ही खेत को तैयार करने के लिए जैविक खाद पर ही निर्भर रहना चाहिए। आमतौर पर मीडियम टेक्सचर वाली गाद वाली मिट्टी सबसे बेहतर मानी जाती है।

कैसे की जाती है फ़िश-राइस फ़ार्मिंग

इस तकनीक के तहत धान की फसल के लिए जमा पानी में ही मछली पालन किया जाता है। धान के खेत में जहां मछलियों को चारा मिलता है, वहीं मछली द्वारा निकलने वाले वेस्ट पदार्थ धान की फसल के लिए जैविक खाद का काम करते हैं। इससे फसल भी अच्छी होती है और मछली पालन भी होता है। किसानों को इस तरह 1.5 से 1.7 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर प्रति सीज़न के हिसाब से मछली की उपज मिल सकती है।

क्यों बेहतर है फ़िश-राइस फ़ार्मिंग

धान के खेत में मछली पालन करने की वजह से फसल को नुकसान पहुंचने का खतरा न के बराबर रहता है। धान के खेत में मछली धान की सड़ी-गली पत्तियों एवं अन्य खरपतवारों, कीड़े-मकोड़ों को खा जाती है। इससे फसल की गुणवत्ता तो बढ़ती ही है, साथ ही धान के उत्पादन में भी वृद्धि होती है। साथ ही इस तकनीक से जल और जमीन का किफायती उपयोग होता है। धान की फसल काटने के बाद खेत में फिर से पानी भरकर मछली पालन किया जा सकता है।

इस तरह की खेती के क्या फायदे हैं?

- मिट्टी की सेहत और उत्पाककता बढ़ती है।
- प्रति यूनिट एरिया पर कमाई बढ़ती है।
- उत्पादन खर्च कम होता है।
- फार्म इनपुट की कम जरूरत पड़ती है।
- किसानों के लिए एक से ज्यादा इनकम सोर्स बनता है।
- पारिवारिक इनकम सपोर्ट मिलता है।
- फैमिली लेबर का पूरा सदुपयोग।
- केमिकल उर्वरक पर कम खर्च।
- किसानों के संतुलित व पौष्टिक।
- किसानों की स्टेलटस और जीविका में सुधार।

फ़िश-राइस फ़ार्मिंग करते हुए इन बातों का रखें ध्यान

धान के साथ मछली पालन करते वक्त इस बात का ध्यान रखें कि भूमि में अधिक से अधिक पानी रोकने की क्षमता हो। खेत में पानी की उचित व्यवस्था मछली पालन के लिए आवश्यक है। इसमें किसान अपने खेत के चारों तरफ जाल की सीमा बनाकर इस पद्धति से खेती कर सकते हैं, ताकि खेत में पानी जमा रहे और मछलियां बाहर नहीं जा पाएं। धान संग मछली पालन पद्धति में मछलियों की चोरी तथा पक्षियों से सुरक्षा के उपाय पर भी ध्यान देने की ज़रूरत है। ध्यान रहे कि इस तरीके से मछलियों का उत्पादन खेती, प्रजाति और उसके प्रबंधन पर निर्भर करता है। इस प्रकार की खेती सीमान्त एवं लघु किसानों की आर्थिक उन्नति और प्रगति में विशेष रूप से लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

नरवाई बचाओ.... (पृष्ठ 5 का शेष)

अतः किसान भाइयों से अपील है कि खेतों में नरवाई बिल्कुल न जलायें तथा विभिन्न रूप से नरवाई का उपयोग खाद बनाने में, भूसा बनाने में उपयोग करें, जिसके लिए हमें निम्न कार्य करना आवश्यक है-

- लघु सीमान्त कृषक जिनके पास कम भूमि है और यदि श्रमिक उपलब्ध हैं तो फसल की कटाई जहाँ तक हो सके मजदूरों द्वारा कटाई की जाये एवं शेष बचे भूसे के डंठल को खेत में ही दबा दिया जाये।
- मिट्टी पलटने वाले यंत्र का उपयोग कर गहरी जुताई करें। जिसमें उपलब्ध नरवाई मिट्टी में दब जाये एवं आगामी समय में कार्बनिक शक्ति बढ़ाने में मददगार साबित हो।
- किसान भाई भूसा मशीन (स्ट्रारीपर) का भी उपयोग कर सकते हैं। विशेषकर कम्बाईन हार्वेस्टर की कटाई के पश्चात गेहूँ व धान की फसल में जो लम्बे (8-12) भूसे के डंठल खड़े रहते हैं, उसे स्ट्रारीपर मशीन से काटकर भूसा बनाया जा सकता है। यह मशीन ट्रैक्टर की पीटीओ शाफ्ट से चलाई जाती है तथा भूसा बंद ट्राली में भरा जाता है, स्ट्रारीपर मशीन पर शासन द्वारा अनुदान प्रदाय किया जाता है, इस हेतु क्षेत्रीय कृषि अधिकारी से संपर्क कर योजना का लाभ उठायें।
- धान के खेत में नरवाई का उपयोग खाद के रुप में करने के लिए हेप्पीसीडर मशीन का उपयोग किया जाता है। जिसमें खड़े डंठलों को तोड़कर खेत में बिखराने की व्यवस्था रहती है। जिसमें मिट्टी के साथ मिलकर भूसा कार्बनिक खाद रूप में परिवर्तित हो जाता है।

- व्यवसाई रूप से नरवाई का उपयोग करने के लिये खासकर धान व गन्ने में बेलर मशीन का उपयोग किया जा सकता है। जिसमें जमीन में पड़े हुए गन्ने की पतियों को मशीन द्वारा एकत्र कर 25 से 30 किलो के गट्ठे बनाये जाते हैं। जिसे पावर जनरेशन सेन्टर प्लाई बोर्ड इंडस्ट्रीज, पेपर इंडस्ट्रीज में प्रदाय कर लाभ कमाया जा सकता है।

रीपर कम बाइंडर एवं स्ट्रारीपर का प्रयोग करें

- कटाई के लिए रीपर कम बाइंडर रीपर का प्रयोग करें जिससे फसल कटाई के साथ बंडल भी बनाए जाते हैं।
- हार्वेस्टर द्वारा छोड़े गये डंठल की कटाई स्ट्रा रीपर से करें।
- स्ट्रा रीपर ट्रैक्टर से चलाने के बाद रोटावेटर चलाकर जुताई करें, जिससे जमीन में एकरूपता होती है। भूमि भुरभुरी होती है जिससे जुताई करने में आसानी होती है एवं वायु का संचार होता है तथा वर्षा का पानी अधिक से अधिक संचय होता है।
- रीपर द्वारा 1 घंटे में एक एकड़ क्षेत्र में कटाई की जा सकती है, जिससे फसल अनुसार 7 से 10 क्विंटल तक भूसा प्राप्त होता है।
- यंत्रों पर कृषि अभियांत्रिकी विभाग द्वारा अनुदान उपलब्ध है।
- म.प्र. शासन एवं जिला प्रशासन के निर्देश अनुसार कंबाइन हार्वेस्टर के साथ एसएमएस (स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम) या भूसा मशीन (स्ट्रा रीपर 6) का उपयोग अवश्य करें।
- सभी हार्वेस्टर संचालकों को तहसीलदार एवं थाना में पंजीयन कराना अनिवार्य होगा।
- प्रत्येक हार्वेस्टर संचालक एवं भूसा मशीन संचालक को साथ में अग्निशमक यंत्र रखना अनिवार्य होगा।
- कहीं पर भी आगजनी /नरवाई जलने की घटना होती है तो कृपया डायल 100, ग्राम पंचायत के नोडल अधिकारी, संबंधित थाना प्रभारी, संबंधित तहसीलदार/एसडीएम को तत्काल सूचित करें।

म.प्र शासन, पर्यावरण विभाग के निर्देश अंतर्गत प्रदेश में फसलों विशेषतः धान एवं गेहूँ की फसल कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेतों में जलाएं जाने को प्रतिबंधित किया गया है। निर्देशों का उल्लंघन किए जाने पर व्यक्ति /निकाय को प्रावधान पर्यावरण क्षतिपूर्ति राशि देय होगी।

सूर्योदय

गरीबों के घर रोशन होंगे ?

● राकेश दुबे, मो. : 9425022703

पर्यावरणीय संकट और महंगे होते ऊर्जा संसाधनों के विकल्प के रूप में स्वच्छ ऊर्जा, खासकर सौर ऊर्जा दुनिया में पहली पसंद बनी है, गरीब के घर को रोशन करने वाला यह प्रयास भी शुरू हुआ है उम्मीद है सार्थक साबित होगा। भारत ने भी तेजी से इस दिशा में कदम बढ़ाए हैं। इन्हीं रचनात्मक प्रयासों के चलते आज देश में सौर ऊर्जा की स्थापित क्षमता 73 गीगावॉट तक हो गई है।

नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के अनुसार दिसंबर, 2023 तक भारत में रूफटॉप सोलर क्षमता लगभग 11.08 गीगावॉट है। विश्व ऊर्जा की जरूरतों की निगरानी करने वाली संस्थाएं बता रही हैं कि आने वाले तीन दशक में दुनिया के अन्य देशों के मुकाबले भारत में ऊर्जा की मांग में सबसे ज्यादा वृद्धि होने वाली है। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि हम इस चुनौती के मुकाबले के लिये ऊर्जा के नये स्रोतों को तलाशें। निस्संदेह, नवीकरणीय ऊर्जा इसका बेहतर विकल्प हो सकता है। देश में थर्मल और जल विद्युत परियोजनाएं के नफे-नुकसान को देखते हुए स्वच्छ ऊर्जा ही कारगर विकल्प बचता है। यही वजह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'प्रधानमंत्री सूर्योदय योजना' की शुरुआत करने की घोषणा की। जिसका मकसद समाज के कमजोर वर्गों को बिजली के बिल से राहत दिलाने के साथ ही स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना भी है।

इस योजना का उद्देश्य देश को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कदम बढ़ाना है। इस योजना के तहत गरीबों व निम्न मध्यमवर्गीय परिवारों का बिजली का खर्च घटाने के मकसद से देश के एक करोड़ घरों पर रूफटॉप सोलर पैनल लगाने का फैसला किया है। कहा जा रहा है कि सूर्य के ताप से ऊर्जा हासिल करने के लिये लगाए जाने वाले पैनल के उपयोग से बिजली के बिल में कमी आएगी, जिससे लोगों को आर्थिक राहत मिल सकेगी। यूं भी देश में मुफ्त बिजली देना बड़ा राजनीतिक मुद्दा रहा है, जिसका नकारात्मक प्रभाव बिजली विभाग की सेहत पर भी पड़ता है।

इस योजना के लाभार्थियों से जुड़ी विस्तृत जानकारी अभी उपलब्ध नहीं है, लेकिन इस बाबत जरूरी ब्योरा देने के लिये वेबसाइट शीघ्र जारी होगी, ऐसा आश्वासन मिला है। जिसके जरिये इच्छुक भारतीय नागरिक आवेदन कर सकेंगे। इस अभियान के तहत अधिकारियों से राष्ट्रीय स्तर पर मुहिम चलाने को कहा गया है। जिससे नागरिकों को रूफटॉफ पैनल के उपयोग के लिये प्रेरित किया जा सके। दरअसल, रूफटॉप सोलर पैनल एक फोटोवोल्टिक पैनल होता है,जिसे किसी मकान की छत पर लगाया जाता है। कालांतर सूरज से ऊर्जा पाने वाले इस पैनल को मुख्य बिजली आपूर्ति करने वाली लाइन से जोड़ दिया जाता है। जिससे यह ग्रिड के माध्यम से आने वाली विद्युत के उपयोग को घटा देता है। फलस्वरूप उपयोगकर्ता का बिजली के बिल का खर्च घट जाता है।

दरअसल, रूफटॉप सोलर पैनल खासा किफायती है। इसकी लागत केवल पैनल लगाने के वक्त एक बार ही आती है। बाद में इसके संचालन में बेहद कम ही खर्च आता है। दरअसल, इसका मकसद जहां लोगों को आर्थिक राहत देना है, वहीं देश में बिजली उत्पादन को बढ़ावा देना भी है। वहीं दूसरी ओर कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिये देश की जो अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताएं हैं, उनमें भी यह पहल सहायक बनती है। कहीं न कहीं सरकार का मकसद इस योजना के जरिये राजनेताओं की मुफ्त की रेवड़िया बांटने की प्रवृत्ति पर लगाम लगाना भी है। पिछले दिनों विधानसभा चुनाव में तमाम राजनीतिक दलों ने अपनी गारंटियों में मुफ्त बिजली देने का वायदा भी शामिल किया। इस मुफ्त बिजली की कीमत कालांतर देश की अर्थव्यवस्था को भी चुकानी पड़ती है। सरकार जल्दी ही इस योजना का रोडमैप जारी करने वाली है। कहा जा रहा है कि वे लोग इस योजना के लिये आवेदन कर सकेंगे, जो भारत के स्थायी नागरिक हों, उनकी वार्षिक आय डेढ़ लाख से अधिक नहीं होनी चाहिए। आवेदक सरकारी कर्मचारी न हो। उसे अपना आधार कार्ड, अधिवास प्रमाणपत्र, बिजली का बिल और आय का प्रमाणपत्र आदि की जानकारियां वेबसाइट पर अपलोड करनी होंगी। उल्लेखनीय है कि सरकार की ओर से ऐसी एक योजना 2014 में लॉन्च की जा चुकी है। विश्वास है, गरीब के घर को रोशन करने वाला यह प्रयास सार्थक साबित होगा।

पुस्तक समीक्षा

किसानी की कविता या कविता में किसानी की पर्याय है अवधेश नेमा की पुस्तक 'अनमोल मिट्टी अनमोल पानी'

पुस्तक का नाम- 'अनमोल मिट्टी अनमोल पानी'
रचनाकार - अवधेश कुमार नेमा
प्रकाशक - स्वयं
पृष्ठ संख्या - 110
उपलब्धता -pothi.com के ऑनलाइन स्टोर पर
मूल्य - रु.295/-
समीक्षक -शिवकुमार शर्मा

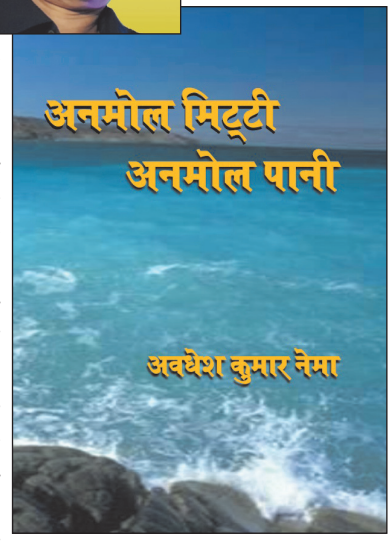

'हींग पोटली बांधकर,सिंचन नाली बीच।
लीजै दीमक के लिए,बिल्कुल आंखें मींच।।'

उक्त पंक्तियां किसी तंत्र-मंत्र या टोना टोटका का भाग नहीं है अपितु कीटों से फसल की रक्षा के लिए एक प्रबंधन मंत्र है जो बेहतर कृषि के लिए रचे गए काव्य मय सूत्रों की अनमोल वाणी के अनुपम संग्रह 'अनमोल मिट्टी अनमोल पानी' में सम्मिलित जैविक खेती दोहावली से उद्धृत किया गया है। 'अनमोल मिट्टी अनमोल पानी' पुस्तक आईआईटी खड़गपुर से 1984 में भूमि एवं जल संरक्षण अभियांत्रिकी में एम.टेक. की उपाधि प्राप्त कर कृषि विभाग के सेवानिवृत्ति अधिकारी श्री अवधेश कुमार नेमा द्वारा रचित है। इस कृति को 'किसानी की कविता या कविता में किसानी' कहा जा सकता है। कृषिकर्म को परिभाषित करने वाली,कृषि तकनीक को सरल शब्दों में व्यक्त करने वाली काव्य कृति में 110 पृष्ठ हैं। रचनाकार ने किसी प्रकाशक के माध्यम से नहीं अपितु स्वयं लिपिबद्ध कर इसे जनहित में प्रकाशित कराया है। यह रचना संग्रह वस्तुतः कृषि की कविता है जिसमें न केवल प्रकृति की अनमोल धरोहर मिट्टी एवं पानी को सहेजने का महत्व ही बताया गया है अपितु किसानी की सूक्ष्म प्रविधियों को दोहा एवं चौपाइयों के माध्यम से सीधे-सरल शब्दों में समझाया गया है। इस कृषि कविता कोश में आठ अध्याय हैं क्रमशः आठ रचनाओं-जल ग्रहण क्षेत्र चालीसा, भू-रक्षा कवच, जैविक खेती दोहावली, भू-जल संग्रह दोहावली, भू-जल विचार दोहावली, कृषि उत्पादन वृद्धि दोहावली, मिट्टी परीक्षण दोहावली तथा कृषि महिमावली को शामिल किया गया है। यह उल्लेखनीय है कि पुस्तक में शामिल भू-जल विचार दोहावली जिसमें कि 49 दोहे शामिल हैं जो बारह मिहिर द्वारा संस्कृत में लिखे गए जल विज्ञान ग्रंथ 'दर्कादल शास्त्र' के श्लोकों का सरल हिंदी में कृतिकार द्वारा दोहे के रूप में किया गया अनुवाद है।

बहुतेरे अधिकारी जब किसानों के बीच में जाते हैं तो कुछ ऐसी शब्दावली का उपयोग करते हैं जो सामान्य तौर पर समझने में कठिनाई होती है अथवा सहजगम्य भाषा का उपयोग नहीं हो पता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस की रचना दोहा एवं चौपाई छंदों में की, लोक की भाषा का उपयोग करने के कारण ही रामचरितमानस लोक ग्रंथ बना। जब तक कोई कविता आमजन के समझने और उसके मानस को प्रभावित करने में समर्थ नहीं होगी तब तक उसकी सार्थकता और उपादेयता नहीं हो सकती गोस्वामी जी ने कृषि से संबंधित अनेक उपमाएं अपनी रचनाओं में शामिल की हैं यथा-'कृषी निरावहिं चतुर किसाना। जिमि बुध तजहिं मोह मद माना।।,ससि सम्पन्न सोह महि कैसी। उपकारी कै सम्पति जैसी।।, समिटि समिटि जल भरहि तलावा। जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा।।' इन उदाहरण से यह स्पष्ट है कि भारतीय ग्रामीण जीवन की कविता जहां भी है वहां कविता में कृषि और कृषि में कविता के दर्शन होना सहज और स्वाभाविक है। घाघ और भड्डरी की कहावतें खेती किसानी और मौसम का तालमेल समझने के लिए कृषक समुदाय में सूत्रों के रूप में उपयोग की जाती रही हैं।

पुस्तक के पहले अध्याय जल ग्रहण चालीसा में आरंभ में आठ दोहा, 48 चौपाई और अंत में चार दोहा शामिल हैं। काव्य की दृष्टि से रचनाओं में अनुप्रास अलंकार भी देखने को मिलता है जैसे 'जन जल जमीं जानवर जंगल। हों विकसित तो जीवन मंगल।।' भू -रक्षा कवच में आरंभ में तीन दोहे 64 चौपाई और अंत में कर दो दोहे सम्मिलित किए गए हैं। रचनाकार कवच में लिखते हैं ' भू -संरक्षण के बिना कृषि कार्य बेकार। मानौ नेक सलाह यह कहें अवधेश कुमार।।' सहज समझने योग्य शब्दों का प्रयोग करने के लिए अंग्रेजी के शब्दों का हिंदीकरण भी किया गया है। सिंचाई द्वारा भू-क्षरण रोकने के लिए लिखा है-'जल सींचो बनवाकर नाली। रहे ढाल सीमित अरु आली ।।, जल गति पर रखो कोदंडा। एक दो फीट हो प्रति सेकंडा।।' जैविक खेती दोहावली में 108 दोहा हैं जिनमें विभिन्न प्रकार के खाद का निर्माण, कीट व्याधि, इल्ली, दीमक, चूहा आदि से फसल के बचाव के उपाय बताएं हैं। रचनाकार एक टेक्नोक्रेट हैं। उन्होंने1984 से 1987 तक कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय जबलपुर में अध्यापन और अनुसंधान कार्य किया। वर्ष 2000 में प्राकृतिक संसाधन विभाग, क्वींसलैंड ऑस्ट्रेलिया से जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया। उनके द्वारा लोक निष्ठा और रचना धर्मिता को व्यक्त करने के लिए कृषि कार्य में व्यावहारिक रूप से उपयोग आने वाले विषयों की काव्यमय प्रस्तुति निर्विवाद रूप से सरकारी सेवा में रहते हुए असरकारी कार्य है जो न केवल किसान बल्कि ज्ञानपिपासु, विद्यार्थी, शोधार्थी के लिए पठनीय है।

(समीक्षक महिला एवं बाल विकास विभाग में संयुक्त संचालक हैं)

पीआरएसआई ने मनाया राष्ट्रीय सम्मान दिवस

भोपाल (कृषक जगत)। पब्लिक रिलेशंस सोसायटी ऑफ इंडिया के भोपाल चैप्टर द्वारा 'सनातन मूल्य और उभरता भारतः जनसंपर्क के परिप्रेक्ष्य में' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में जनसंपर्क विभाग के अपर संचालक श्री जी. एस. वाधवा को लोक संपर्क सम्मान सहित 19 महिला पत्रकार व संचारकर्मियों को अचला एवं उदिता अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

पीआरएसआई भोपाल चैप्टर के अध्यक्ष सर्वश्री मनोज कुमार द्विवेदी, पीआरएसआई के सचिव पंकज मिश्रा, कोषाध्यक्ष केके शुक्ला, माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि के रजिस्ट्रार अविनाश वाजपेयी, प्रकाश साकल्ले, विजय बोन्द्रिया भी उपस्थित थे।

गुडईयर किसानों को दे रहा मुफ्त ट्रैक्टर हुड कवर पाने का मौका

इंदौर (कृषक जगत)। देश की प्रसिद्ध टायर कम्पनी गुडईयर द्वारा किसानों को मुफ्त ट्रैक्टर हुड कवर पाने का मौका दिया गया है। इस ऑफर में किसानों द्वारा गुडईयर के पिछले ट्रैक्टर फार्म टायर की एक जोड़ी खरीदने पर एक ट्रैक्टर हुड कवर मुफ्त दिया जाएगा। यह उपहार योजना 20 अप्रैल से 2024 से आरम्भ हो गई है,जो स्टॉक की उपलब्धता तक जारी रहेगी।

इस ऑफर की जानकारी देते हुए गुडईयर कंपनी के रीजनल बिजनेस हेड (वेस्ट) श्री ए.पी. नेमा ने बताया कि कम्पनी द्वारा किसानों को धूप और बारिश से बचाने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और गुजरात के किसानों को मुफ्त ट्रैक्टर हुड कवर पाने का अवसर दिया गया है।

श्री नेमा ने कहा कि इस योजना के तहत किसानों द्वारा गुडईयर के विभिन्न ब्रांड के पिछले ट्रैक्टर फार्म टायर की एक जोड़ी खरीदने पर एक ट्रैक्टर हुड कवर मुफ्त दिया जाएगा। इसके साथ ही राष्ट्रीय कृषि अखबार 'कृषक जगत' की सदस्यता भी मुफ्त दी जाएगी। इस संबंध में किसान अपने नजदीकी डीलर से संपर्क करें।

ट्रैक्टर टायर के दामों में उछाल, 1 मई से बढ़ेंगे दाम

इंदौर (कृषक जगत)। देश की विभिन्न टायर कंपनियों द्वारा 30 अप्रैल के बाद से ट्रैक्टर टायर के दामों में वृद्धि के संकेत दिए हैं। इसका कारण कच्चे माल की कीमतों में भारी वृद्धि होना बताया जा रहा है। ट्रैक्टर टायर के दामों में 1 से 3.5 प्रतिशत तक की वृद्धि प्रस्तावित है। इस वृद्धि से किसानों का आर्थिक भार बढ़ जाएगा।

व्यावसायिक सूत्रों के अनुसार देश की विभिन्न टायर कंपनियों गुडइयर इंडिया लि., सिएट टायर्स, अपोलो टायर्स और जेके टायर्स द्वारा कच्चे माल की कीमतों में भारी वृद्धि होने के कारण आगामी 1 मई से ट्रैक्टर टायर के दामों में वृद्धि की जा रही है। इस बारे में विक्रेताओं को अवगत कराया गया है। देश की शेष टायर कंपनियां भी जल्द ही मूल्य वृद्धि की सूचना देंगी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार कंपनियों द्वारा ट्रैक्टर टायर के दामों में 1 से 3.5 प्रतिशत तक की वृद्धि प्रस्तावित है। इस वृद्धि से किसानों को अब ट्रैक्टर टायर की अधिक कीमत चुकानी पड़ेगी। इस संबंध में सभी कंपनियों द्वारा एसकेयू स्तर पर विवरण जल्द ही साझा किया जाएगा।

सबसे अधिक उपज देने वाली गेहूं किस्म डीबीडब्ल्यू 327

पंजाब, हरियाणा में तोड़ा पुराना रिकॉर्ड

चंडीगढ़। पंजाब के फतेहगढ़ साहिब और हरियाणा के पानीपत जिले के किसानों ने आईसीएआर-भारतीय गेहूं और जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा विकसित डीबीडब्ल्यू 327 (करण शिवानी) किस्म से रिकॉर्ड तोड़ पैदावार की सूचना दी है। डीबीडब्ल्यू 327 (करन शिवानी) किस्म दो प्रमुख गेहूं उत्पादक राज्यों में असाधारण प्रदर्शन करने वाली किस्म के रूप में उभरी है।

जलवायु लचीली और बायोफोर्टिफाइड (Zn- 40.6 पीपीएम) किस्म को ICAR-IIWBR, करनाल द्वारा विकसित किया गया था, और सिंचित और जल्दी बोई गई स्थितियों के लिए उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में खेती के लिए जारी किया गया था और 2023 में मध्य भारत क्षेत्र के लिए अधिसूचित किया गया था।

आईसीएआर ने पर इस किस्म को सर्वश्रेष्ठ फसल विज्ञान प्रौद्योगिकियों में से एक के रूप में मान्यता दी है। इस किस्म की उपज क्षमता 87.7 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है और औसत उपज 79.4 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जो गेहूं के लिए एक नया बेंचमार्क है। किसानों ने आईसीएआर – आईआईडब्ल्यूबीआर बीज पोर्टल से गुणवत्तापूर्ण बीज प्राप्त किए, फीडबैक दिया और इस किस्म में कृषि अनुसंधान और नवाचार की सफलता पर प्रकाश डालते हुए उच्चतम उपज की सूचना दी।

ये किस्म लगाने वाले युवा प्रगतिशील किसान श्री दविंदर सिंह उर्फ हरजीत सिंह, ग्राम चियारथल खुर्द, फतेहगढ़ साहिब, पंजाब, ने बताया कि उन्होंने 8 नवंबर 2023 की बुआई पर प्रति एकड़ 33.70 क्विंटल (84.0 क्विंटल/हेक्टेयर) उपज प्राप्त की। वहीं पानीपत के बरौली गाँव के श्री सुरेश कुमार, मित्तन फार्म, ने 7 नवंबर 2023 की बुआई पर 32.40 क्विंटल/एकड़ (81.0 क्विंटल/हेक्टेयर) के असाधारण उपज स्तर के लिए डीबीडब्ल्यू 327 किस्म को श्रेय दिया।

आईआईडब्ल्यूबीआर, करनाल के निदेशक डॉ. ज्ञानेंद्र सिंह ने किसानों की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्नत फसल किस्मों को विकसित करने पर जोर दिया। उन्होंने आगे कहा कि डीबीडब्ल्यू 327 किस्म की सफलता अनुसंधान और विकास, किसानों को सशक्त बनाने और देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

20 दूरदर्शी जलवायु उद्यमी भविष्य की चुनौतियों को हल करने एकजुट हुए

(सचिन बोन्द्रिया)

मुंबई (कृषक जगत)। जलवायु परिवर्तन के वैश्विक प्रभाव पहले से ही पारिस्थितिकी तंत्र, विशेषकर कृषि में महसूस किए जा रहे हैं। भविष्य की जलवायु और स्थिरता संबंधी चिंताओं के लिए दीर्घकालिक, व्यवहार्य समाधान विकसित करने के लिए नवाचार और सहयोग हमारे लिए सबसे बुनियादी स्तंभ हैं। इस दृष्टिकोण के साथ, इम्प्रूविंग लाइव्स फाउंडेशन ने बायोरिडल, आरआईआईडीएल सोमैया विद्या विहार के साथ मिलकर ओमनी एक्टिव हेल्थ टेक्नोलॉजीज द्वारा वित्त पोषित क्लाइमेट टेक एंड सस्टेनेबिलिटी एक्सेलेरेशन प्रोग्राम लॉन्च किया। जिसमें 150 से अधिक अनुप्रयोगों में से चुने गए 20 दूरदर्शी जलवायु उद्यमियों के साथ चर्चा हुई, जिनका विचार इन समाधानों को बड़े पैमाने पर लाने और विशेष रूप से कृषि और सामग्री क्षेत्र में नवाचार पर केंद्रित चुनौतियों से निपटने में मदद करना था।

समाधानों ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, सामग्री, स्वच्छ ऊर्जा, कृषि प्रौद्योगिकी और बागवानी के क्षेत्रों पर प्रकाश डाला। जिसमें ग्रामीण जिलों से लेकर वित्तीय राजधानी तक के समाधान शामिल थे, जो विकसित भारत की सच्ची दृष्टि को प्रदर्शित कर रहे थे।

भावना पंड्या, प्रमुख, बायोरिडल एंड इनोवेशन कैटलिस्ट, रिडल सोमैया विद्या विहार ने कृषक जगत से कहा 'क्लाइमेट टेक एंड सस्टेनेबिलिटी एक्सेलेरेशन प्रोग्राम जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए सामूहिक समर्पण के प्रमाण के रूप में खड़ा है। जलवायु उद्यमियों की अगली पीढ़ी का पोषण और समर्थन करके, हम उन्हें आने वाली पीढ़ियों के लिए अधिक टिकाऊ भविष्य बनाने में सक्षम बना रहे हैं। वहीं इम्प्रूविंग लाइव्स फाउंडेशन के प्रमुख रुश्वा परिहार ने कहा, हमें नवाचार को बढ़ावा देने में सक्षम होने पर गर्व है।

स्टार्टअप्स के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपने उत्पादों या पेशकशों का व्यावसायीकरण करके विचार से बड़े स्तर तक नहीं जा पाना है। इस अनूठे कार्यक्रम के माध्यम से, हमें उम्मीद है कि हम स्थिरता के क्षेत्र में इन अभूतपूर्व समाधानों को बढ़ाने में मदद करने के लिए उन्हें समर्थन और धन देने में सक्षम हैं। हम सभी स्टार्टअप्स को अपना समर्थन जारी रखने और उनकी यात्रा में आवश्यकतानुसार मदद करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। वहीं ओमनी एक्टिव हेल्थ टेक्नोलॉजीज के सीओओ और भारत प्रमुख, श्री चैतन्य देसाई ने कहा, 'यह कार्यक्रम नवाचार को बढ़ावा देने के लिए ओमनी एक्टिव की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है, और हमारे जैसे कॉरपोरेट्स को इन युवा स्टार्टअप और उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र की रचनात्मकता का समर्थन करने और लाभ उठाने का अवसर देता है, जिससे वास्तविक मार्ग प्रशस्त होता है।'

उल्लेखनीय है कि इस समूह के इन स्टार्टअप्स की वैश्विक प्रभाव डालने की क्षमता को पहचानते हुए, शीर्ष 6 स्टार्टअप्स को बड़े पैमाने पर अपने नवाचारों का व्यवसायीकरण करने के लिए अनुदान से सम्मानित किया गया। ये अनुदान विशेष रूप से इस कार्यक्रम के दौरान पहचाने गए और पोषित नवाचारों के विकास में तेजी लाने पर केंद्रित थे। इनमें कश्मीर स्थित फारूकी फीड्स, गुड़गांव स्थित सीआई मेट्रिक्स, लखनऊ स्थित लेन्ज ऊर्जा उद्योग प्रा लि,बेंगलुरु स्थित इकोसाइट प्रौद्योगिकी प्रा. लि.,बैंगलोर स्थित ईजी कृषि प्रा. लि. एवं मुंबई स्थित कोकोप्लास्ट शामिल हैं। इन नवाचारों में कृषि अपशिष्टों का पुनर्चक्रण करके पशु चारा उद्योग में परिवर्तन, फसल वृद्धि की भविष्यवाणी, ईंधन-रहित विद्युत जनरेटर तकनीक,सटीक मृदा परीक्षण, फूलों के कचरे से अगरबत्ती निर्माण तथा नारियल के कचरे से विभिन्न अनुप्रयोगों के साथ कठोर प्लास्टिक के विकल्प विकसित करने के प्रयोग किए गए हैं।

प्राकृतिक संसाधनों का करें सुव्यवस्थित उपयोग : डॉ. चौधरी

जनेकृविवि की विभिन्न इकाईयों का डीडीजी एनआरएम ने किया निरीक्षण

जबलपुर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय, जबलपुर में कृषि अनुसंधान भवन नई दिल्ली, डीडीजी, नेचुरल रिसोर्स मैनेजमेंट (एनआरएम) डॉ. एस. के. चौधरी एवं आईआईएफएसआर,मेरठ डॉ. सुनील तिवारी का आगमन हुआ। इस दौरान डीडीजी डॉ. चौधरी एवं डॉ. तिवारी द्वारा माइक्रोब रिसर्च एंड प्रोडक्शन सेंटर, आईएफएस यूनिट, डेयरी, मेडिशनल गार्डन एवं बीज संग्रहालय का निरीक्षण किया गया और यहां के वैज्ञानिकों को उचित दिशा-निर्देश दिये गये। गौरतलब है कि जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलगुरू डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा के मार्गदर्शन में सतत् रूप से शोध कार्य एवं शैक्षणिक कार्य संपादित किये जा रहे हैं।

निरीक्षण उपरांत डॉ. चौधरी ने माइक्रोब रिसर्च एंड प्रोडक्शन सेंटर के द्वारा बनाये जा रहे विभिन्न प्रकार के जैव उर्वरकों की सराहना की और कहा कि केन्द्र में आधुनिक मशीनें हैं जिससे यहां पर जैव उर्वरक पर्याप्त मात्रा और उत्तम क्वालिटी के फसलों एवं पोषक तत्वों के अनुरूप तैयार किये जा सकते हैं। जो प्रदेश ही नहीं पूरे देश के लिये हितकारी कदम हेगा। आपने निरीक्षण के दौरान मेडिशनल गार्डन में औषधीय पौधों की विभिन्न किस्मों के बारे में जानकारी प्राप्त की और उनसे विभिन्न बीमारियों में सहायक पत्तियों एवं बनने वाले पाउडर को लेकर भी गंभीरता से चर्चा की। साथ ही गोबर की खाद एवं केंचुआ खाद के संबंध में वैज्ञानिकों से फसलों में अधिक उपयोग हेतु चर्चा की।

इसके अलावा बीज संग्रहालय में भी क्डॉ. चौधरी एवं डॉ. तिवारी ने पहुंचकर वहां पर संरक्षित विभिन्न किस्मों के बीजों को देखा। दरअसल जनेकृविवि के बीज संग्रहालय में परम्परागत बीज भण्डारण में क्रमागत विकास, मप्र में चारा अनुसंधान एवं विकास के धान, लघुधान्य के बीजों का अनूठा संग्रह एक ही स्थान पर उपलब्ध है।

इस अवसर पर संचालक अनुसंधान सेवायें डॉ. जी.के. कौतु, संचालक प्रक्षेत्र डॉ. आर. एस. शुक्ला, डॉ. पी.एस.कुल्हाड़े, डॉ. आर. के. समैया, डॉ.प्रवीण कुमार मिश्रा, डॉ. जे.पी. लखानी, डॉ. ब्रजेश दीक्षित, बायोफर्टिलाईजर सेंटर के प्रमुख डॉ. वाय.एम.शर्मा, डॉ. ज्ञानेन्द्र तिवारी, डॉ.एच.के. राय. डॉ. अनुभा उपाध्याय, डॉ. एम. के. अवस्थी, डॉ. विभा पांडे, डॉ. सुब्रता शर्मा, डॉ. एस.बी.अग्रवाल, डॉ. नमृता जैन, डॉ. अनय रावत, सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी डॉ. बी.एस.द्विवेदी, डॉ. जी.एस.टैगोर, डॉ. अमित झा, डॉ. शिवराम कृष्णन, डॉ. आशीष गुप्ता, डॉ. आर. पी. साहू, डॉ. विकास गुप्ता, डॉ. राकेश साहू, डॉ. फूलचंद्र अमूले, डॉ. अभिषेक शर्मा सहित अन्य वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

कृषक जगत द्वारा प्रकाशित फसल पुस्तक श्रृंखला

नाम ..... ग्राम.....
पोस्ट ..... तह. ..... जिला.....
फोन/मोबा. .....कुल राशि.....
ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या/संलग्न ड्रॉफ्ट नं. .....
मनी ऑर्डर क्र. ..... वी.पी. भेजें।

पांच पुस्तकें एक साथ खरीदने पर डाक खर्च मुफ्त

नोट : कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम नीचे लिखे पते पर भेजें

प्रधान कार्यालय : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011
फोन: 0755-4248100,2554864, मो. : 9826255861
इंदौर :331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर,
मो. : 09826021837

समस्या -समाधान

समस्या– अनानास की खेती करना चाहता हूं जानकारी देने का कष्ट करें।

– रामस्वरूप रघुवंशी

समाधान – • अनानास के लिये गर्म नमी

वाली जलवायु उपयुक्त रहती है। इसके लिए 22 से 32 डिग्री से. तापक्रम उपयुक्त रहता है। दिन–रात के तापक्रम में कम से कम 4 डिग्री का अंतर होना चाहिए। रेतीली दोमट मिट्टी जिसका पीएच 5.0 से 6.0 के मध्य हो इसके लिये उपयुक्त रहती है।

• रोपाई के लिये अनानास के सकर,स्लीप या अनानास का ऊपरी भाग उपयोग में लाया जाता है, लगाने के पूर्व इन्हें 0.2 प्रतिशत डाईथेन एम 45 के घोल से उपचारित कर लें।

• रोपाई दिसम्बर–मार्च के मध्य अधिकांश क्षेत्रों में की जाती है परंतु स्थिति अनुसार इसे बदला जा सकता है। बहुत अधिक वर्षा के समय रोपाई न करें।

• रोपाई के 12 से 15 माह में फसल तैयार हो जाती है। पौधे से पौधे की दूरी 25 से.मी., लाइन से लाइन की दूरी 60 से.मी. खाईयों के बीच रखें। उर्वरक की मात्रा प्रति पौधा 12 ग्रा. नत्रजन, 4 ग्राम स्फुर व 12 ग्राम पोटाश रखें। अधिकतर अनानास की खेती वर्षा आधारित होती है। आवश्यकतानुसार 20–25 दिन में सिंचाई देने से लाभ होता है।

समस्या– सर्पगंधा की खेती के लिये आवश्यक बातें क्या हैं।

– प्यारेलाल

समाधान– • सर्पगंधा को विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उगाया जा सकता है परंतु जैविक तत्व युक्त दोमट मिट्टी जिसमें पानी का निकास अच्छा हो उपयुक्त रहती है। मिट्टी का पी.एच. मान 4.6 से 6.2 के मध्य हो तो अच्छा है। पी.एच.मान 8.0 से अधिक न हो।

• आप सर्पगंधा–1 जाति लगा सकते हैं जो 18 महिने में प्राप्त हो जाती है और इसकी उपज लगभग 25 क्विं. / हेक्टर है।

• इसे बीज, जड़, तना, कटिंग द्वारा उगाया जा सकता है।

• बीजों से नर्सरी मई के मध्य में लगा लें बीजों को 6–7 से.मी. दूरी पर 1–2 से.मी. गहराई में बोयें। बोने के पूर्व बीजों को रात

भर पानी में भिगा लें।

• इस फसल को 20 किलो नत्रजन, 30 किलो फास्फोरस तथा 30 किलो पोटाश प्रति हेक्टर आधार खाद के रूप में लगती है। खड़ी फसल में 20–20 किलो नत्रजन प्रति हेक्टर दो बार खड़ी फसल में दें। पौध संरक्षण करते रहे। उपज के रूप में जड़ों का उपयोग होता है। जहां रोपाई के लगभग 3 वर्ष बाद निकालें।

समस्या – गेहूं को भंडारण में रखने के लिये उपयुक्त दशा क्या होनी चाहिए ताकि कीट न लगें।

– सतीश पटेल

समाधान– गेहूं तथा अन्य अनाजों के भंडारण में कीटों तथा सूक्ष्म जीवों के आक्रमण की संभावना बनी रहती है। इससे बचने के लिये निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

• अनाज में भंडारण के पूर्व नमी 10 प्रतिशत से कम रहनी चाहिए। अधिक नमी में अनाज में कीट तथा फफूंद का प्रकोप होने की संभावना हमेशा बनी रहेगी। इसलिये आप

गेहूं को अच्छी तरह सुखा लें सूखने के बाद यदि दाना दांतों से दबाने पर कट्ट की आवाज के साथ टूटे तो समझ लीजिए की वह पूरी तरह सूख गया है और संग्रहण के लायक है। अधिकांश कीट अनाज की 10 प्रतिशत नमी में नहीं पनप पाते हैं।

• धूप में सुखाने के बाद संग्रहण के पूर्व कुछ समय के लिये उसे छाया में रखें जिससे दानों की गर्मी निकल जाये।

• यदि गेहूं में साबुत दानों के साथ कटे व टूटे दाने भी हो तो कीट व फफूंद लगने की संभावना रहती है। यदि आपको लंबे समय तक गेहूं भंडारण में रखता है तो छान कर टूटे कटे दाने निकाल कर स्वस्थ पूर्ण दाने ही भंडारण में रखे।

• भंडारण के पूर्व भंडारगृह को अच्छी तरह साफ कर उसमें दरारों, गड्ढों को भर लें ताकि उनमें कीट पहले से ही छिपे न रहे।

समस्या– पिछले वर्ष अच्छी तरह सुखा कर भंडारण करने के बाद भी रोयेदार इल्ली खपरा भृंग का आक्रमण हुआ था। कारण बतायें।

– देवेन्द्र उइके

समाधान – • गेहूं में लगने वाले खपरा भृंग संसार का संग्रहित अनाज का प्रमुख कीट है। यह कीट 2 प्रतिशत आद्रता की स्थिति में भी अपना विकास करने की क्षमता रखता है। यह अकेला कीट है जो दानों में 8 प्रतिशत से कम नमी में भी विकसित हो सकता है। गेहूं

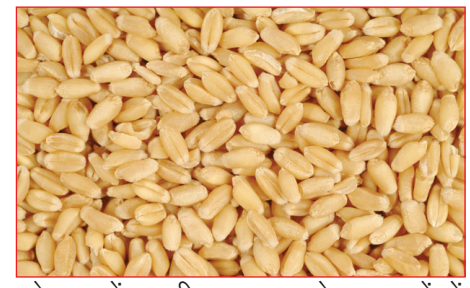

को धूप में अच्छी तरह सुखाने पर दानों में नमी का प्रतिशत 9 के नीचे नहीं जा पाता इसलिये अच्छी तरह सुखाने के बाद भी खपरा भृंग का प्रकोप भंडारण में हो सकता है।

• यह 8 डिग्री से.ग्रे. से तापक्रम में जिन्दा रहता है और यदि इसे कोई भोज्य पदार्थ न मिले तब भी यह तीन वर्ष तक जिन्दा रहने की क्षमता रखता है। यह अपनी त्वचा छोड़ता रहता है अनाज की ऊपरी सतह पर इकट्ठी त्वचा द्वारा इसके प्रकोप को पहचाना जा सकता है।

• भंडारण के पूर्व ये सुनिश्चित कर लें कि भंडारगृह में खपरा भृंग की कोई भी अवस्था न हो। इसके लिये भंडारगृह की सफाई के बाद भंडारगृह में मेलाथियान 0.1 प्रतिशत घोल का छिड़काव अच्छी तरह कर लें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान
कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

कृषक जगत

पांच पुस्तकें एक साथ खरीदने पर डाक खर्च मुफ्त

बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक	सब्जियों में पौध संरक्षण	मशरूम एक लाभ अनेक	मिर्च की उन्नत खेती	केला उत्पादन	गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण
रु. 90/-	रु. 70/-	रु. 40/-	रु. 50/-	रु. 70/-	रु. 70/-
कोड : 016	कोड : 017	कोड : 019	कोड : 020	कोड : 025	कोड : 027

पपीता	अदरक	फलों की खेती	सजाएं फूलों से बगिया	घर की बगिया
रु. 50/-	रु. 50/-	रु. 70/-	रु. 60/-	रु. 90/-
	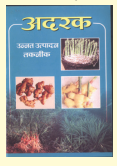			
कोड : 031	कोड : 032	कोड : 040	कोड : 041	कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं

016 ☐ 017 ☐ 019 ☐ 020 ☐ 025 ☐ 027 ☐ 031 ☐ 032 ☐ 034 ☐ 040 ☐ 041 ☐ 050 ☐

नाम _____

ग्राम _____ पोस्ट _____ तह. _____

जिला _____ फोन/मोबा. _____

कुल राशि _____ ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या _____

संलग्न ड्राफ्ट नं. _____ मनी आर्डर रसीद क्र. _____ वी.पी. भेजें ☐

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011
फोन: 0755-4248100, 2554864, मो. : 9826255861

इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर, मो. : 09826021837

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

स्वास्थ्य - शिक्षण

स्टीविया की पत्तियां ब्लड शुगर का वैकल्पिक स्त्रोत

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलगुरू डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा की प्रेरणा से एवं पादप कार्यिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आर. के. समैया के मार्गदर्शन में औषधीय उद्यान में स्टीविया की खेती चर्चा का विषय बनी हुई है। दरअसल औषधीय उद्यान प्रभारी डॉ. ज्ञानेन्द्र तिवारी की देखरेख में स्टीविया की खेती की जा रही है। डॉ. तिवारी ने बताया कि स्टीविया की खेती किसानों की आय का स्त्रोत ही नहीं, बल्कि डायबिटीज के मरीजों के लिये शक्कर का वैकल्पिक स्त्रोत होने के साथ-साथ ब्लड शुगर को नियंत्रित करता है। भारत में आजकल हर तीसरा-चौथा व्यक्ति डायबिटीज, मोटापा जैसी घातक बीमारियों से ग्रसित होता जा रहा है। इसलिये ऐसे मरीजों के लिये शुगर का वैकल्पिक स्त्रोत एवं बीमारी से बचाव की आवश्यकता है। स्टीविया की पत्तियां शक्कर की तुलना में 20 से 25 गुना अधिक मीठी होने के कारण इसका व्यवसायिक उपयोग पूरे विश्व में बहुत तेजी से हो रहा है।

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा स्टीविया की उन्नत खेती

प्रसंस्करण, मूल्य-संवर्धन एवं विपणन के क्षेत्र में शोध कार्य किये जा रहे हैं, साथ ही इसके उत्पादों का पेटेंट प्राप्त करने की दिशा में कार्य प्रगति पर है। दरअसल इसकी खेती के लिये मप्र के वो सभी क्षेत्र उपयुक्त हैं, जहां जल भराव की समस्या नहीं होने के साथ-साथ सिंचाई की समुचित व्यवस्था है। स्टीविया की खेती से परंपरागत कृषि फसलों की तुलना में तीन गुना तक अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। स्टीविया की फसल एक बार लगाने के बाद 5 साल तक पत्तियों का उत्पादन किया जा सकता है। प्रत्येक वर्ष 3 बार पत्तियों की कटिंग की जा सकती है। स्टीविया के पत्तों से ही औषधि बनाई जाती है। हर वर्ष 30 से 35 क्विंटल सूखी पत्तियों का उत्पादन प्रति हेक्टेयर होने की संभावना बताई गई है। जिससे वर्ष भर में प्रति हेक्टेयर 150 से 175 क्विंटल सूखी पत्तियों का उत्पादन होता है। लिहाजा स्टीविया की पत्तियां सौ रूपये किलोग्राम के मूल्य से विक्रय की जाती हैं। विश्वविद्यालय स्थित औषधीय उद्यान में वर्तमान में 11 सौ प्रकार के अलग-अलग किस्मों के पौधे संरक्षित हैं। जिनसे कई गंभीर बीमारियों के उपचार हेतु औषधियां तैयार की जाती हैं एवं शोध कार्य किये जा रहे हैं।

स्टीविया से फायदे

- स्टीविया के सेवन से मोटापा कम किया जा सकता है।
- स्टीविया से डायबिटीज को नियंत्रित किया जा सकता है।
- हार्ट के मरीजों के लिये स्टीविया फायदेमंद होती है।
- जोड़ों के दर्द में स्टीविया आराम दिलाती है।
- स्टीविया की खेती से कम लागत में कई गुना अधिक मुनाफा प्राप्त किया जा सकता है।
- स्टीविया की खेती कभी भी की जा सकती है।

अमृत रस

● डॉ. साधना गंगराड़े
drsadhanagangrade@gmail.com

संगठन के साकेत में सेवा की सुगंध

सामाजिक संगठन समाज के विकास, प्रगति और उन्नति के हित में गठित किये जाते हैं। जितना सामाजिक संगठन सक्रिय होगा समाज में विकास की गति बढ़ेगी। समाज में चेतना, नवोत्साह, सहयोगिक भावना, समाज के प्रति प्रतिबद्धता, आगे बढ़कर काम करने की लालसा जब युवा कार्यकर्ताओं में आयेगी तभी सामाजिक प्रगति, विकास संभव होगा।

आचार्य श्रीराम शर्मा का यह लिखना प्रासंगिक है कि वर्तमान समय की पुकार है समाज को नेता नहीं सृजेता चाहिए। ऐसे नि:स्वार्थ सेवा परायण जो यश लोलुपता से दूर रहकर जनजागरण का, व्यक्ति निर्माण का कार्य पूर्ण श्रद्धा और तत्परता के साथ कर सके।

समाज सेवा और नि:स्वार्थता का अन्योन्याश्रित संबंध है जिसे अपमान में भी सुख मिले और मान की किंचित भी अपेक्षा न हो, वह व्यक्ति ही समाज सेवा में खरा उतर सकता है। आदर्श सेवक में हनुमान जी का नाम सबसे ऊपर है, हनुमान का अर्थ है जिसने मान की इच्छा का हनन कर लिया हो। रामदल में हनुमानजी के समान ज्ञान, बल और कुशलता में कोई नहीं था फिर भी वे सुग्रीव के सेवक बनकर रहे। अत: जो समाजसेवी अपने को सबसे छोटा और दीन माने वही सच्चा सेवक है। रामचरित मानस में कहा गया है।

'सबसे सेवक धर्म कठोरा'

समाज एक वृक्ष के समान है, सामाजिक कार्यकर्ता उसमें लगने वाले फल हैं जिस प्रकार वृक्ष के सभी फल पककर उपयोग में नहीं आ पाते, कुछ फल आंधी के कारण टूट कर गिर जाते हैं कुछ फल पक्षी कुतर कर जमीन पर गिरा देते हैं। शेष बचे हुए फल ही पक कर उपयोग में आ पाते हैं, उसी प्रकार समाज सेवा में कार्य करने वाले कुछ कार्यकर्ता सेवाकार्य की विशालता को देखकर निराश होकर दूर हो जाते हैं।

आचार्य विनोबा जी कहा करते थे यदि हममें शक्कर के गुण हैं तो हम समाज में ऐसे घुल-मिल सकते हैं जैसे पानी की एक बूंद, तब हमारा अस्तित्व केवल बूंद न रहकर पूरा समुद्र बन सकता है। परंतु स्वार्थपरकता, मतभेद, अहंकार के टकराव, मनचाहा जीने की प्रवृत्ति और स्वछंद जीवन हमें न तो बूंद बनने देता है न ही समुद्र में मिलने देता है। समाज से अलग रहकर हम जी नहीं सकते हमें उसी में रहना है उसके स्थायित्व और मजबूती की चिंता करना है। आपसी मनभेद और अहंकार के टकराव को महत्व नहीं दिया जाना चाहिये कभी-कभी समाज सेवा के लिये आत्म सम्मान गरल को भी पीना पड़ता है।

समाजसेवी को स्वार्थ, मतभेद, अहंकार, टीका-टिप्पणी को पीछे रखकर समाज के हितों की रक्षा करना है समाज को संगठित रखना है।

बकौल नीरज के -

जिनको घायल किया न कांटों ने वो सुगन्धित कभी नहीं होते।

लघु कथा

सुनहरी धूप

घर और दफ्तर की जिम्मेदारियां कभी-कभी थका दिया करती मुझे। पर जब भी जीवन की आंच तेज लगती है, मां की याद ही आया करती है हमेशा। अक्सर देखा करती थी, मां को। आंगन की धूप को सहेजते। कभी अचार मुरब्बों के मर्तबानों में, या सूखती बड़ियों में। चमकता घर, महकते रिश्ते और मजबूत कैरियर। उम्र भर बेहद सफल अफसर रहीं, पर अफसरी की ठसक न तो घर पहुंची, और न दफ़्तर में घरेलू छाया की झलक भी आई कभी। बच्चों के भी सफलताओं के रास्ते सुगमता से गढ़ दिए। लेकिन कभी दो पल फुरसत में ना देखा।

समय ने आहिस्ता से रिटायरमेंट की दहलीज़ भी पार करा दी। अब उन्हें कभी किताबों में डूबे, तो कभी रंग-कूचियों से खेलते देखती हूं। यूं ही बैठी हुआ करती हैं देर तक, कोई पुरानी ग़ज़ल गुनगुनाते।

अभी कुछ दिनों से मन बना लिया है उन्होंने, कर्नाटक संगीत सीखने का। कल बच्ची सी बनी मेरी गोद में आ लेटीं। बालों को सहलाते मैने पूछ ही लिया आखिर- क्या तुम थकी नहीं कभी? देखो अब तो मन का उजाला बालों तक भी आ पहुंचा। क्या तुम्हारे हिस्से की धूप कभी मिली तुम्हें?

मां मुस्कुरा दीं। बिट्टो, सभी को जीवन में उजली धूप मिला ही करती है, उसे सुनहरी बना कर भीतर मन को रंग लेना चाहिए। तब बाहर अपने हिस्से की धूप खोजनी न पड़ेगी। और अब मेरे अंदर के छुटपुट अंधेरे छंट गए हैं। भीतर तक सुनहरी धूप जो पसर चुकी...

- आकांक्षा प्रफुल्ल पाण्डेय, मुम्बई

स्वाद और सेहत से भरा भोजन

● गेहूं के आटे में मौसमी सब्जियां या पकी हुई छिलके वाली दाल डालकर स्वादिष्ट पराठे बना सकते हैं व इसे दही व रायते के साथ खा सकते हैं.यह संपूर्ण पौष्टिक आहार होगा.

● गेहूं का दलिया या चावल की खिचड़ी बनाते समय उसमें गाजर, मटर,भुट्टे के दाने, धनिया, प्याज आदि डालिए स्वाद भी बढ़ जाएगा और पौष्टिक, विटामिन्स, कार्बोहाइड्रेट और रेशे की मात्रा भी बढ़ जाएगी. ● बेसन गट्टे बनाते समय पत्तेदार सब्जियां या लौकी किस कर मिला देने से गट्टे की सब्जी की पौष्टिकता बढ़ जाएगी. ● कढ़ी में मटर या ताजी चवला फली के दाने या हरे चने, पालक, धनिया या मिक्स सब्जियाँ डाल सकते हैं. मीठा नीम बीमारियों से हमारी रक्षा करता है.

● टमाटर, गाजर, अमरूद,अंगूर, धनिया, पोदीना, करौंदा, कैरी आदि की चटनी बनाकर हम विटामिन सी एवं फ्रूट शर्करा प्राप्त कर सकते हैं.

पाक्षिक पंचांग

29 अप्रैल से 12 मई 2024 तक
विक्रम संवत् 2081
वैशाख कृष्ण 6 से वैशाख शुक्ल 5 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
29	अप्रैल	सोम	वैशाख कृष्ण	6
30	अप्रैल	मंगल	----------	7
1	मई	बुध	----------	8
2	मई	गुरु	----------	9 पंचक 11.42 दिन से
3	मई	शुक्र	----------	10 पंचक
4	मई	शनि	----------	11 वरूथिनी एकादशी व्रत
5	मई	रवि	----------	12 प्रदोष व्रत, पंचक
6	मई	सोम	----------	13 शिव चतुर्दशी व्रत
7	मई	मंगल	----------	14 अमावस्या
8	मई	बुध	----------	30 स्ना.दा. अमावस्या
9	मई	गुरु	वैशाख शुक्ल	1
10	मई	शुक्र	----------	2/3
11	मई	शनि	----------	4 विनायकी चतुर्थी व्रत
12	मई	रवि	----------	5 मदर्स डे

पालक: सेहत के लिये लाभदायक

स्त्रियों के लिये पालक का शाक अत्यंत उपयोगी है। महिलाएं यदि अपने मुख का नैसर्गिक सौंदर्य एवं रक्तिमा (लालिमा) बढ़ाना चाहती हैं, तो उन्हें नियमित रूप से पालक के रस का सेवन करना चाहिए। प्रयोग से देखा गया है कि पालक के निरंतर सेवन से रंग में निखार आता है। इसे भाजी (सब्जी) बनाकर खाने की अपेक्षा यदि कच्चा ही खाया जाए, तो अधिक लाभप्रद एवं गुणकारी है। पालक से रक्त शुद्ध एवं शक्ति का संचार होता है। पालक को मिक्सी में पुदीना के साथ पीस कर मसाज करने से त्वचा में गुलाबी चमक आती है। पिसी हुई पालक बालों के लिये भी उपयोगी है।

ग्वालियर कृषि विश्वविद्यालय में एसएसआर बनाने के लिए तकनीकी कार्यशाला हुई

ग्वालियर (कृषक जगत)। कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर में शिक्षा को सशक्त बनाने व यूजीसी द्वारा नैक ग्रेड अर्जित करने हेतु आयोजित तकनीकी प्रशिक्षण में तकनीकी विशेषज्ञ प्रो. एस.के. गुप्ता द्वारा एस.एस.आर. बनाने हेतु बारीकियों की विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की गई। उन्होंने जानकारी को एकत्रित करने, सही रूप में सही स्थान पर दर्शाने आदि बिन्दुओं को स्पष्टता से बताया।

कार्यशाला में कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार शुक्ला ने कहा कि हम सभी को इस प्रशिक्षण से लाभ लेकर नैक द्वारा ग्रेड अर्जित करने हेतु कठोर परिश्रम करें।

कार्यक्रम में अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. मृदुला बिल्लौरे, निदेशक विस्तार सेवायें डॉ. वाय. पी. सिंह, निदेशक अनुसंधान सेवायें व निदेशक शिक्षण डॉ. संजय शर्मा, कुलसचिव श्री अनिल सक्सेना, शैक्षणिक उपकुलसचिव डॉ. एन. एस. भदौरिया, कार्यपालन यंत्री डॉ. एच.एस भदौरिया, विश्वविद्यालय अंतर्गत पांचों महाविद्यालयों के अधिष्ठाता एवं प्राध्यापकगण, कृषि विज्ञान केन्द्रों से वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों ने अपनी सहभागिता दी। डाटा सेंटर में प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों हेतु प्रो. गुप्ता द्वारा फाइलों एवं जानकारियों को जोड़ना आदि गतिविधियों का प्रस्तुतिकरण किया गया।

देवास में कृषि विस्तार अधिकारियों का अंत: सेवाकालीन प्रशिक्षण संपन्न

देवास (कृषक जगत)। कृषि विज्ञान केन्द्र, देवास द्वारा नव आगंतुक कृषि विस्तार अधिकारियों का एक दिवसीय अंत: सेवाकालीन प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसमें देवास के विभिन्न विकासखण्डों के लगभग 30 कृषि विस्तार अधिकारियों ने भाग लिया।

आरम्भ में केन्द्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. ए.के.बड़ाया ने बताया कि जिले के कृषकों को खरीफ मौसम के लिए अपनी तैयारियां अभी से शुरू कर देनी चाहिए। उन्होंने बताया कि देवास जिला सोयाबीन प्रधान क्षेत्र है इसलिए सोयाबीन की उन्नत किस्म, उर्वरक आदि का प्रबंध अभी से कर के रखें। साथ ही उन्होंने समन्वित कीट एवं व्याधि प्रबंधन, प्राकृतिक खेती आदि के बारे में भी विस्तृत चर्चा की।

उप संचालक कृषि श्री आर.पी.कनेरिया ने नव-आगंतुक कृषि विस्तार अधिकारियों को जिले में कृषि विविधीकरण अपनाने के बारे में जागरूक किया। केन्द्र के शस्य वैज्ञानिक डॉ. महेन्द्र सिंह ने खरीफ फसल अंतर्गत सोयाबीन, मक्का, ज्वार की उन्नत उत्पादन तकनीक के बारे में विस्तारपूर्वक कृषि विस्तार अधिकारियों को बताया।

केन्द्र के पौध संरक्षण वैज्ञानिक डॉ. मनीष कुमार ने सोयाबीन में लगने वाले मुख्य कीट एवं बीमारियों के बारे में बताया। केन्द्र के उद्यानिकी वैज्ञानिक डॉ. निशिथ गुप्ता ने खेती में आमदनी बढ़ाने हेतु फल एवं सब्जी की खेती करने पर जोर दिया।

केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. के.एस.भार्गव ने सिंचाई जल प्रबंधन पर विस्तृत चर्चा करते हुए खेती में उन्नत कृषि यंत्रों के उपयोग पर प्रकाश डाला। केन्द्र की मृदा वैज्ञानिक डॉ. सविता कुमारी ने मिट्टी की जांच के लिए सही तरीके से मृदा नमूने लेने के बारे में जानकारी दी। साथ ही नव आगंतुक कृषि विस्तार अधिकारियों को मृदा नमूने लेने के बारे में प्रायोगिक तरीके से बताये। इस प्रशिक्षण में कृषि विभाग के सह-संचालक श्री विलास पाटिल, श्री लोकेश गंगराड़े भी उपस्थित रहे एवं कार्यक्रम का सफल संचालन एवं आभार श्रीमती नीरजा पटेल प्रसार वैज्ञानिक द्वारा किया गया।

नरवाई जलाने पर किसानों पर 15 हजार का अर्थदंड लगाया

देवास (कृषक जगत)। देवास नगर तहसील के ग्राम जेतपुरा में नरवाई जलाने पर किसानों समन्दर सिंह, उदय सिंह, हेमसिंह और रतन सिंह (संयुक्त खाता) पर 15 हजार का अर्थदंड आरोपित किया गया है। देवास नगर तहसीलदार श्रीमती सपना शर्मा ने बताया कि ग्राम जेतपुरा में 3 हेक्टेयर भूमि में नरवाई जलाई गई, जो संयुक्त खाते की भूमि है। बताया गया कि जिले में नरवाई जलाने पर अर्थदण्ड की कार्यवाही की जायेगी। जिसमें दो एकड़ से कम पर 2 हजार 500, दो एकड़ से अधिक व 5 एकड़ से कम पर 5 हजार रुपये और 5 एकड़ से अधिक पर 15 हजार रुपये अर्थदंड वसूला जायेगा।

सिवनी के दो किसानों ने नरवाई से बनी खाद से बढ़ाया फसल उत्पादन

सिवनी (कृषक जगत)। सिवनी जिले के दो किसानों सिवनी विकासखंड के ग्राम एरपा के कृषक श्री दुलीचंद सनोडिया और ग्राम पीपरडाही के कृषक श्री अर्जुन पंचेश्वर द्वारा डीकम्पोजर का उपयोग कर नरवाई का बेहतर प्रबंधन किया है। साथ ही साथ नरवाई से खाद बनाकर अपनी कृषि आय को भी बढ़ाया है।

कृषक श्री सनोडिया बताते हैं कि उनके द्वारा खेत में नरवाई नहीं जलाई जाती बल्कि डीकम्पोजर का उपयोग करके नरवाई को खाद के रूप में बदल देते हैं। जिसका उपयोग उनके द्वारा आगामी फसलों में किया गया। इसके साथ ही उन्होंने डीकम्पोजर का प्रयोग बीज उपचार एवं खड़ी फसल में पर्णीय छिड़काव में भी किया है। जिससे उन्हें फसल में अच्छा

लाभ मिला तथा गेहूं फसल में प्रति एकड़ 19 क्विंटल तक उत्पादन प्राप्त हुआ। ऐसा ही उदाहरण सिवनी विकासखण्ड के ही ग्राम पीपरडाही के कृषक श्री अर्जुन पंचेश्वर द्वारा भी प्रस्तुत किया गया है। कृषक अर्जुन पंचेश्वर द्वारा बताया गया कि उनके द्वारा खेत में नरवाई नहीं जलाई जाती बल्कि डीकम्पोजर का प्रयोग कर के नरवाई को खाद के रूप में बदल देते हैं। नरवाई के डीकम्पोजर के माध्यम से प्रबंधन से कृषक श्री पंचेश्वर की न केवल आय बढ़ी है साथ ही पर्यावरण का संरक्षण भी हुआ है।

भ्रमण के दौरान उप संचालक कृषि श्री मोरिस नाथ एवं सहायक संचालक कृषि श्री प्रफुल्ल घोड़ेसवार मौजूद रहे।

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/-
⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से 'कृषक जगत' – प्रति सप्ताह ◻ भोपाल ◻ जयपुर ◻ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम .....

.....

ग्राम .....पो. .....

डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : .....

वि.ख. ..... तह. .....

जिला ..... पिन ◻◻◻◻◻◻ राज्य .....

शिक्षा ..... भूमि ..... उम्र .....

ट्रैक्टर/मॉडल ..... फोन/मो. .....

ई-मेल .....

मेरा सदस्यता शुल्क रुपये ..... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/

मनीऑर्डर/क्र. ..... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम

कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php

Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793,
Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861

कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

SINCE 1898 GOODYEAR FARM TIRES
गुडईयर फार्म टायर के सौजन्य से

नरवाई जलाना खेती के लिए नुकसानदेह

राजगढ़ (कृषक जगत)। राजगढ़ के उप संचालक कृषि द्वारा जिले के कृषकों से अपील की गई है कि गेहूं की फसल काटने के बाद बचे हुए फसल अवशेष (नरवाई) जलाना खेती के लिये नुकसानदेह कदम है। कटाई के पश्चात् सामान्य तौर पर बचे हुए फसल अवशेष में आग लगा देने से कई अप्रिय घटना के साथ-साथ पर्यावरण प्रदूषण तथा मिट्टी की संरचना भी प्रभावित होती है।

मिट्टी की संरचना प्रभावित - उप संचालक कृषि श्री हरीश मालवीय ने बताया कि जिले में गेहूं फसल की कटाई कम्बाईन हार्वेस्टर, रीपर एवं अन्य साधनों से की जा रही है। कटाई के पश्चात सामान्य तौर पर बचे हुए फसल अवशेष में आग लगा देने से कई अप्रिय घटना के साथ-साथ पर्यावरण प्रदूषण तथा मिट्टी की संरचना भी प्रभावित होती है। श्री मालवीय ने बताया जिले में नरवाई में आग लगाना प्रतिबंधित किया गया है। कोई भी व्यक्ति यदि खेत में नरवाई में आग लगाते पाया जाता है तो ऐसी स्थिति में 2 एकड़ से कम भूमि रखने वाले को 2500 रूपये प्रति घटना पर्यावरण क्षतिपूर्ति राशि देना होगी। 2 एकड़ से अधिक किन्तु 5 एकड़ से कम भूमि रखने वाले को 5000 रूपये तथा 5 एकड़ से अधिक भूमि रखने वाले को 15000 रूपये प्रति घटना पर्यावरण क्षतिपूर्ति राशि की भरपाई करना होगी। उप संचालक कृषि ने किसानों को सलाह दी है कि कम्बाईन हार्वेस्टर से कटाई के उपरांत फसल अवशेषों में आग लगाने की घटनाओं को देखते हुए कटाई में कम्बाईन हार्वेस्टर के साथ स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम या स्ट्रॉ रीपर का उपयोग करके फसल अवशेषों से भूसा प्राप्त किया जा सकता है।

खेत में फसलों के कृषि अपशिष्टों को जलाने से होने वाली हानियां - भूमि में उपलब्ध जैव विविधता समाप्त हो जाती है। भूमि में उपस्थित सूक्ष्म जीव जलकर नष्ट हो जाते है। सूक्ष्मजीवों को नष्ट होने के फलस्वरूप जैविक खाद का निर्माण बंद हो जाता है। भूमि की ऊपरी परत में ही पौधों के लिये आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध रहते हैं। आग लगने के कारण पोषक तत्व जलकर नष्ट हो जाते हैं। भूमि कठोर हो जाती है। जिसके कारण भूमि की जल धारण क्षमता कम होने से फसलें सूखती है। खेत की सीमा पर लगे पेड़ पौधे (फल, वृक्ष आदि) जलकर नष्ट हो जाते हैं। पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है। वातावरण के तापमान में वृद्धि होती है, जिससे धरती गर्म होती है। भूमि में होने वाली रासायनिक क्रियाएं भी प्रभावित होती है, जैसे कार्बन, नाइट्रोजन एवं कार्बन-फास्फोरस का अनुपात बिगड़ जाता है। जिससे पौधों को पोषक तत्व ग्रहण करने में कठिनाई होती है। केंचुए नष्ट हो जाते हैं। इस कारण भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है। नरवाई जलाने से जन धन की हानि होती है। अत: नुकसान से बचने के लिये किसान फसल अवशेष में आग न लगाएं।

बोरवेल खुला मिलने पर होगी एफआईआर

इंदौर जिले में 390 बोरवेल बंद करवाए गए

इंदौर (कृषक जगत)। इंदौर जिले में अनुपयोगी सूखे बोरवेल को बंद करवाने के लिए कलेक्टर श्री आशीष सिंह के निर्देशन में प्रभावी कार्यवाही की गई है। जिले में पिछले दिनों एक अभियान चलाकर 390 बोरवेल बंद करवाए गए हैं। चेतावनी दी गई है कि अगर कहीं बोरवेल खुले पाए जाएंगे तो संबंधित मालिक के विरूद्ध एफआईआर दर्ज कराई जायेगी।

उल्लेखनीय है कि रीवा जिले में पिछले दिनों अनुपयोगी बोरवेल में मासूम बच्चे के गिरने की हुई घटना को दृष्टिगत रखते हुए कलेक्टर श्री आशीष सिंह के निर्देश पर अनुपयोगी बोरिंग को बंद करवाए जाने का अभियान शुरू किया गया। अभियान के तहत इंदौर जिले में अब तक अनुपयोगी 390 बोरवेल बंद करवाए गए हैं। जिला पंचायत इन्दौर के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री सिद्धार्थ जैन ने बताया कि जनपद पंचायतों को क्षेत्र में सूखे बोरवेल की पहचान कर इन्हे विभिन्न उपायों से सुरक्षित कवर करने के लिए

निर्देशित किया गया था। इन्दौर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत सहायक अभियंता एवं उप यंत्रियों के दल द्वारा गत 18 से 24 अप्रैल तक ग्रामीण क्षेत्रों में निरीक्षण किया गया। 390 सूखे बोरवेल खुले पाए गए । इन सभी बोरवेल को बंद करवाने की कार्यवाही की गई। श्री जैन ने बताया कि जनपद पंचायत मुख्य कार्यपालन अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि वे अब खुले बोरवेल को सुरक्षित करने संबंधी प्रमाण पत्र सभी ग्राम पंचायतों से प्राप्त करें। उनसे लिखित में लें कि उनकी ग्राम पंचायत में अब कोई भी सूखा बोरवेल असुरक्षित खुला नहीं है। अब यदि खुले बोरवेल पाए जाते हैं तो ऐसे बोरवेल के मालिक के विरूद्ध एफआईआर भी दर्ज कराई जाए।

मध्यभारत की सबसे बड़ी नर्सरी
तिरुपति ग्रीन हाऊस नर्सरी
देश का सबसे बड़ा पौध भंडार औषधीय, फलदार, सजावटी फूलों के पौधे, इनडोर, टिश्यूकल्चर, क्रीपर, बोन्साई, सक्यूलेन्ट्स, केक्टस, हैंगिंग प्लांट, वर्टीकल प्लांट, लकी बैंबू रेंज, फॉरेस्ट्री प्लांट एवं सब्जियों के पौधों की विस्तृत श्रृंखला में
: आपका स्वागत है :
सिरलाय (बड़वाह) मध्यप्रदेश
www. tirupatinursery.com
email : tirupatinursery@gmail.com
मो. : 9479457720/99/63/86/96/16/17/13/31/51
मार्च 2025

ashwa shakti
कृषि दर्शन
डीलरशिप आमंत्रित है
हायड्रॉलिक प्लाऊ रिवर्सिबल
सबमर्सिबल मोटर लिफ्ट मशीन
अधिकृत विक्रेता : कृषि दर्शन एंड कंपनी
30, साजन नगर, नेमावर रोड, इंदौर, मो. : 9827039888

पटवारी एग्रो एजेन्सी
:: वितरक ::
◆ कलश सीड्स लि. ◆ बायोस्टेट इंडिया लि. ◆ बॉयर कॉप साइंस ◆ धानुका एग्रीटेक लि.
◆ एफ.एम.सी. इंडिया प्रा.लि. ◆ घरड़ा केमिकल्स लि. ◆ अतुल एग्रीटेक लि.
◆ रामा फॉस्फेट्स लि. ◆ जी.एन.एफ.सी. ◆ इंसेक्टीसाइड्स इंडिया लि. ◆ बीएएसएफ
◆ डयूपॉन्ट इंडिया लि. ◆ क्रिस्टल क्राप साइंस ◆ डाउएग्रो साइंसेस ◆ एग्री सर्च इंडिया
◆ मंशा इंडिया लि. ◆ स्वाल कार्पोरेशन लि. ◆ मेघमनी आर्गेनिक्स ◆ अदामा इंडिया लि.
17, विशाल टॉवर, इंदिरा काम्पलेक्स, नवलखा चौराहा, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2403694, 2400412, मो. : 9425077083

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नर्सरी
ISO 9001 : 2015 सर्टिफाईड
किसान हाईटेक ग्रीनहाऊस नर्सरी
द्वारा पपीता, मिर्च, टमाटर, बैंगन, तरबूज, करेला, पत्तागोभी, फूलगोभी आदि सब्जी के पौधे टेबल स्टेण्ड के ऊपर रखकर तैयार किए जाते हैं
सम्पर्क : 9407361901, 9407361902, 9407361903
सहयोगी प्रतिष्ठान : बागवानी बाजार नर्सरी
जहां पर फलदार, सजावटी व फारेस्टी पौधों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है।
संपर्क : मो. : 9407853117, 9407853118, 9407853119
नर्सरी स्थल : ग्राम-सिरलाय, तह.- बड़वाह 451115, जिला-खरगोन (म.प्र.)
मार्च 25

कैरा टेक्नोप्लास्ट प्रा.लि., खरगोन
आपकी समृद्धि हमारी प्राथमिकता
हमारे यहां पर ड्रिप में फ्लैट और राउण्ड एचडीपीई व स्प्रिंकलर पाईप, एचडीपीई क्वाइल, लपेटा पाईप एवं रेन पाईप वर्जिन एवं उच्च क्वालिटी में बनाये जाते हैं।
सम्पर्क - निरंजन नगर, कसरावद रोड, खरगोन,
मो. : 7880017028, 7880017021
मई 25

बीज वितरक
गोगांवा फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी
जिला-खरगोन (म.प्र.) 451335
उन्नत गेहूं एवं चना बीज के उत्पादक एवं वितरक
सम्पर्क - 997771190
7000362599, 9826206837
जून 24

TerraGlebe Farmers Producer Company Limited
यूरोप में मिर्च निर्यात (एक्सपोर्ट) करने वाला मध्यप्रदेश का पहला किसान उत्पादक संगठन (FPO)
''एक जिला - एक उत्पाद'' के अन्तर्गत IPM मिर्च उत्पादक संगठन
आपका हार्दिक अभिनंदन करता है
July 24
Mob.: 9575524408, 9926610831
Email: terraglebe@gmail.com
Web.: www.terraglebe.com

मल्टीप्लेक्स ऑर्गेनिक मैजिक
multiplex
मल्टीप्लेक्स®
मल्टीप्लेक्स किसान खुशहाल किसान
मल्टीप्लेक्स की जैविक खाद अपनाएं और बंजर होती जमीन को बचाएँ
July 24
कर्नाटका एग्रो केमिकल्स, बैंगलोर
multiplex@multiplexgroup.com
www.multiplexgroup.com
सन 1974 से किसानो की पहली पसंद

VARDAAN® स्प्रे पम्प एवं एसेसरीज़
63, पोलोग्राउण्ड, इन्दौर-452015 (म.प्र.)
फोन: 0731-4970600. मो.: 7772000444.
वरदान एग्री सॉल्यूशन्स प्रा.लि.

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-

- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि ■ बीज ■ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक ■ अधिकतम 25 शब्द

- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण जीएसटी 5 प्रतिशत अतिरिक्त

साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्राएं, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagatindia
@krishakjagat @krishak_jagat

स्वराज ट्रैक्टर्स की स्वर्ण जयंती, विशिष्ट ट्रैक्टर का हुआ अनावरण

चित्र में श्री राजेश जैजुरीकर, एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर व सीईओ आटो व फार्म सेक्टर महिन्द्रा एंड महिन्द्रा लि., श्री हेमंत सिक्का प्रेसिडेंट एफईएस महिन्द्रा, श्री हरीश चव्हाण, सीईओ स्वराज डिवीजन, श्री राजीव रैलन विपणन एवं बिक्री प्रमुख स्वराज।

चंडीगढ़ (कृषक जगत)। महिंद्रा समूह के अंग, स्वराज ट्रैक्टर्स ने अपनी स्वर्ण जयंती के अवसर पर सीमित संस्करण वाले विशिष्ट ट्रैक्टर का अनावरण किया। सटीकता से तैयार और सुनहरी साज-सज्जा वाले ये विशिष्ट ट्रैक्टर, वफादार ग्राहकों के प्रति स्वराज की कृतज्ञता का प्रतीक है। जो सुनहरे मुख्य डेकल से लेकर स्वराज के सम्मानित ग्राहक और ब्रांड एम्बेसेडर, एमएस धोनी के हस्ताक्षर तक इस विशिष्ट मॉडल की हर बारीकी शानदार क्लास और स्टाइल को दर्शाता है।

स्वराज ट्रैक्टर की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में सीमित संस्करण वाले स्वराज 855 एफई और स्वराज 744 एफई ट्रैक्टर प्रदर्शित किए गए। पुरानी यादों और सौहार्द्र के बीच आयोजित यह कार्यक्रम स्वराज की लंबी विरासत के प्रति सम्मान और इसके सभी हितधारकों के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक था। यह सीमित संस्करण वाला ट्रैक्टर पूरे देश में केवल दो महीने के लिए पांच स्वराज वेरिएंट-843 एक्सएम, 742 एक्सटी , 744 एफई, 744 एक्सटी और 855 एफई में उपलब्ध होगा। इस कार्यक्रम के साथ जोश का स्वर्ण उत्सव का समापन हुआ, जो एक राष्ट्रव्यापी अभियान था जिसमें देशभर की यात्रा हुई और 50 हज़ार से अधिक ग्राहकों से सम्पर्क किया गया।

इस मौके पर एक नए सीएसआर कार्यक्रम स्किलिंग 5000% की भी घोषणा की गई, जो समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए स्वराज की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है, 'स्किलिंग 5000' के माध्यम से , कृषि और अन्य व्यवसायों में व्यावसायिक कौशल प्रदान कर महिलाओं और दिव्यांगों को सशक्त बनाना स्वराज का लक्ष्य है।

किसानों को कृषि आदान पहुँचाने के लिए

बायर की सीएससी, ग्राम उन्नति के साथ साझेदारी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। वैश्विक उद्यम, बायर ने इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी-एसपीवी) के साथ अपनी साझेदारी की घोषणा की है। इस रणनीतिक सहयोग का उद्देश्य किसानों को डिजिटल क्षमता निर्माण के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण कृषि-इनपुट उपलब्ध कराना और ग्रामीण आजीविका और कृषि आय को मजबूत करना है। इस साझेदारी का पहला चरण तेलंगाना, आंध्र, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल में कार्यान्वित होगा। बीज से लेकर फसल तक बायर के कृषि-समाधानों की पूरी श्रृंखला तक पहुंच के अलावा, किसान सीएससी के ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से फसल-विशिष्ट कृषि संबंधी सलाह का भी लाभ उठा सकते हैं।

एमओयू के हिस्से के रूप में, छोटे धारक किसान सीएससी के ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से समय पर फसल सलाह, अच्छी कृषि पद्धतियों के हस्तांतरण और प्रीमियम बायर उत्पादों तक पहुंच प्राप्त करने में सक्षम होंगे। बायर और सीएससी-एसपीवी का लक्ष्य अगले दो वर्षों में 500,000 (0.5 मिलियन) से अधिक छोटे किसानों को सशक्त बनाना है।

बायर दक्षिण एशिया के अध्यक्ष, साइमन-थॉर्स्टन विबुश ने कहा, 'देश में खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने में छोटे किसान महत्वपूर्ण हैं और बायर डिजिटल द्वारा संचालित आवश्यक कृषि आदानों और विशेषज्ञ कृषि संबंधी मार्गदर्शन तक पहुंच के विस्तार के माध्यम से उन्हें सशक्त बनाने के लिए समर्पित है।'

सीएससी-एसपीवी के एमडी और सीईओ श्री संजय राकेश ने कहा, 'बायर क्रॉप साइंस लि. के साथ यह साझेदारी ग्रामीण समुदाय और कृषि-उद्यमियों को बेहतर समर्थन देने के लिए अंतिम छोर तक उचित समाधानों तक पहुंच को सक्षम बनाएगी।' यह बायर क्रॉपसाइंस लि. के नेतृत्व में 'बेटर लाइफ फार्मिंग एलायंस' के लिए एक मजबूत परियोजना मंच भी प्रदान करता है, जिसके माध्यम से कंपनी छोटे किसानों के बीच बाजार-उन्मुख कृषि प्रथाओं और सेवाओं को बढ़ावा देते हुए स्थायी आय वृद्धि में योगदान कर सकती है। साझेदारी के तहत, बायर वित्तीय साक्षरता, प्रबंधन और कृषि-व्यवसाय प्रथाओं पर महिला-केंद्रित प्रशिक्षण की सुविधा भी प्रदान करेगा।

बागवानी किसानों के लिए

सिंजेंटा ने महाराष्ट्र में अंकुर विकास SapRaise टेक्नोलॉजी लॉन्च की

नई दिल्ली/नासिक (कृषक जगत)। सिंजेंटा इंडिया ने एक स्मार्ट सीडलिंग समाधान SapRaise लॉन्च करने की घोषणा की, जो महाराष्ट्र में कृषि क्षेत्र में बदलाव लाने का वादा करता है। यह नासिक और पुणे के किसानों के लिए गुणवत्तापूर्ण सब्जियों की पौध का एक उच्च तकनीक स्रोत तैयार करेगा।

नासिक बागवानी में अग्रणी

नासिक बागवानी में अग्रणी है, यहाँ एशिया की सबसे बड़ी टमाटर मंडी है, 80,000 एकड़ में टमाटर, 30,000 एकड़ में फूलगोभी, 2,500 एकड़ में तरबूज और 10,000 एकड़ में शिमला मिर्च और गर्म मिर्च उगाई जाती है। SapRaise पहल से किसानों को लाभ होगा और साल भर उच्च उपज देने वाली रोपण सामग्री मिलेगी।

सहयोग

ओम गायत्री ग्लोबल सीडलिंग्स के सहयोग से SapRaise नर्सरी की शुरुआत नासिक और पुणे जिलों में कृषि नवाचार में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह हाई-टेक नर्सरी पौध उत्पादन में एक उत्कृष्टता केंद्र के रूप में कार्य करेगी और यह सिंजेंटा के यंग प्लांट रेजर्स (YPR) के साथ कंपनी की रणनीतिक साझेदारी का परिणाम है।

सिंजेंटा इंडिया के एमडी और कंट्री हेड, श्री सुशील कुमार ने कहा, 'इस साझेदारी के माध्यम से, हमारा लक्ष्य मौजूदा वाईपीआर साझेदारी के साथ सहयोगी व्यवसाय मॉडल के माध्यम से उन्नत अंकुर विकास का प्रदर्शन करके अंकुर उत्पादन में नए मानक स्थापित करना है। SapRaise स्मार्ट सीडलिंग समाधान साझा ज्ञान और अत्याधुनिक सीडलिंग तकनीक के माध्यम से हमारे उत्पादकों की गुणवत्ता और लाभप्रदता बढ़ाने के लिए सिंजेंटा की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालता है।'

उत्कृष्टता केंद्र का विस्तार

श्री सुशील ने बताया, 'हमारा उत्कृष्टता केंद्र उत्पादकों को उच्च गुणवत्ता वाले, स्वस्थ पौधे प्रदान करेगा, यह सुनिश्चित करते हुए कि उन्हें बेहतर फसल पैदावार और बढ़ी हुई आय प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम संभव शुरुआत मिलेगी।'

श्री संजय कुमार सिंह, टेरिटरी बिजनेस हेड, वेजिटेबल सीड्स, साउथ एशिया ने कहा, 'एक्सीलेंस सेंटर के माध्यम से ओएम गायत्री ग्लोबल और हमारे वाईपीआर भागीदारों के साथ हमारा सहयोग किसानों को सफल होने के लिए आवश्यक उपकरण और संसाधन प्रदान करके कृषि परिदृश्य को बदल देगा।'

नाबार्ड ने विश्व पृथ्वी दिवस पर जलवायु रणनीति 2030 लॉन्च की

मुंबई (कृषक जगत)। सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, नाबार्ड ने पृथ्वी दिवस के अवसर पर अपने जलवायु रणनीति 2030 दस्तावेज का अनावरण किया। दस्तावेज नाबार्ड के अध्यक्ष श्री शाजी के वी द्वारा जारी किया गया। इस व्यापक रणनीति का उद्देश्य भारत की हरित वित्तपोषण की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करना है। जलवायु रणनीति 2030 को चार प्रमुख स्तंभों में संरचित किया गया है।

अत्यधिक मांग के बावजूद, जहां भारत को 2030 तक संचयी रूप से 2.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक तक पहुंचने के लिए सालाना लगभग 170 बिलियन अमेरिकी डॉलर की आवश्यकता है, वर्तमान हरित वित्त प्रवाह गंभीर रूप से अपर्याप्त है। 2019-20 तक, भारत ने हरित वित्तपोषण में लगभग 49 बिलियन अमेरिकी डॉलर जुटाए, जो कि जरूरत का एक अंश मात्र था।

इस मांग को पूरा करने के लिए नाबार्ड की जलवायु रणनीति 2030 को चार प्रमुख स्तंभों में संरचित किया गया है: (1) सभी क्षेत्रों में हरित ऋण में तेजी लाना, (2) व्यापक बाजार-निर्माण भूमिका निभाना (3) नाबार्ड का आंतरिक हरित परिवर्तन, और (4) रणनीतिक संसाधन जुटाना। यह रणनीतिक पहल न केवल पर्यावरणीय प्रबंधन के प्रति नाबार्ड की प्रतिबद्धता को मजबूत करती है, बल्कि इसे एक लचीली और टिकाऊ अर्थव्यवस्था की ओर भारत के संक्रमण में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में भी स्थापित करती है।

Hyundai EXTER.

शुरुआती कीमत @ ₹6.13 लाख* | PETROL

19.4 KM/PL*

CNG मे भी उपलब्ध
शुरुआती कीमत @ ₹8.43 लाख* | CNG

27.1 KM/KG*

Best in segment
20.32cm (8") HD infotainment with 60+ Bluelink features

Best in segment
Spacious cabin with ample headroom, kneeroom & legroom

1st in segment
Voice enabled smart electric sunroof

1st in segment
Dashcam with dual camera

4 Cylinder engine
- 1.2 l Kappa petrol engine
- MT & AMT
- Paddle shifters
- Cruise control

Also available in eco-friendly CNG
Power-packed performance

- Stylish
- Spacious
- Connected

Scan to chat with us
my Hyundai app
Hyundai Click to Buy
3 YEAR Unlimited Kilometer Warranty
UPTO 7 YEARS Extended Warranty^
3 YEAR Road Side Assistance (RSA)*
HYUNDAI
UPTO 5 YEARS Shield of Trust Running Repair Package*
UPTO 5 YEARS Shield of Trust Super Maintenance Package*
Bluelink 3 Years free Bluelink subscription*

*Terms & Conditions apply. Price mentioned is Ex-showroom. Features & specifications shown may vary or not be part of standard fitment & are subject to change without prior notice. Some of the features, specifications or equipment illustrated or described herein may not be standard fitment and may be available at additional cost, Hyundai Motor India reserves the right to change specifications, colour, equipment and schemes at any time without prior notice. Segment is defined based on SUV dimensions of overall length between 3 800 - 3 900 mm. **Warranty upto 3 Years or unlimited km whichever occurs earlier. ^Upto 7 years extended warranty on chargeable basis for petrol variants and upto 5 years extended warranty on chargeable basis for CNG variants. Please note that the extended warranty mentioned for all variants is inclusive of the 3 years unlimited kilometer warranty. The CNG kit is warranted directly by CEV Engineering (P) Ltd. Functionality of Bluelink depends on adequate power supply and uninterrupted network connectivity to infotainment system. The Bluelink system is designed in such a way that it makes vehicle theft difficult subject to adequate power supply, uninterrupted network connectivity to informant system and all circuits and battery connection are untampered. Technical specifications have been rounded-off to the nearest value. Deployment of airbags depends upon number of factors explained in detail in owner's manual, available on Hyundai website. The colour of the car shown herein may vary from the actual colour of the car due to the limitations of the printing process. The black shade on glasses is due to lighting effect. Visit your nearest Hyundai dealership for more details. Hyundai urges you to follow traffic rules – these are meant to keep you safe on roads.

For Information Contact: Toll Free: 1800114645 MP: Bhopal: CI Hyundai, Jinsi, Ph: 8827244444 Koh-e-fiza, Ph: 9981996165 Vidisha, Ph: 9981996184 Ganj Basoda, Ph: 9425301405, CI Hyundai, Near D-Mart, Ph: 7470777222, Bareli, Ph: 9109977347, Surjeet Hyundai, J.K Road, Ph: 9111111713, Sehore DBU Ph: 9111111713 Raisen, Ph: 9111111713 Surjeet Hyundai, Chunabhatti, Near Shahpura Ph: 9111111713, **Gwalior:** Royal Hyundai, Ph: 7880109807 Shivpuri, Ph: 8719011307 Morena, Ph: 9109172948 Dabra, Ph: 7880109807 ASM Hyundai, Shivpuri Link Road Ph: 9926188224, Hotel Vinayak Compound, Mlb Road Ph: 9926186401, 9926186402 Bhind, Ph: 9926186416, Guna: Royal Hyundai, Ashok Nagar Ph: 7804877177, **Indore:** Harsh Hyundai, Ph: 9669696171/72/73 Sanwer Ph: 9977051505, Surjeet Hyundai, Ph: 9111111713, Prince Hyundai, Ph: 9111104400, Dhar, Ph: 9575301757 Pipliyahana, Ph: 9893999505, Mhow, Ph: 8516889106 Kukshi, Ph: 9156000730 **Jabalpur:** Anmol Hyundai, Ph: 9111102091 Mandla, Ph: 9111021089 Dindori, Ph: 9111021088 Gadarwara Ph: 9174007844, Prestige Hyundai, Ph: 9826907601 Narsinghpur, Ph: 7000370940 Sihora, Ph : 9977301086 Katni: Ph: 9826907638, **Ujjain:** Prince Hyundai, Ph: 7747947947 Agar Ph: 9575300871 Nagda Ph: 7024109019, **Hoshangabad:** Punyashila Hyundai, Ph: 9171114410 Harda, Ph:9171114430